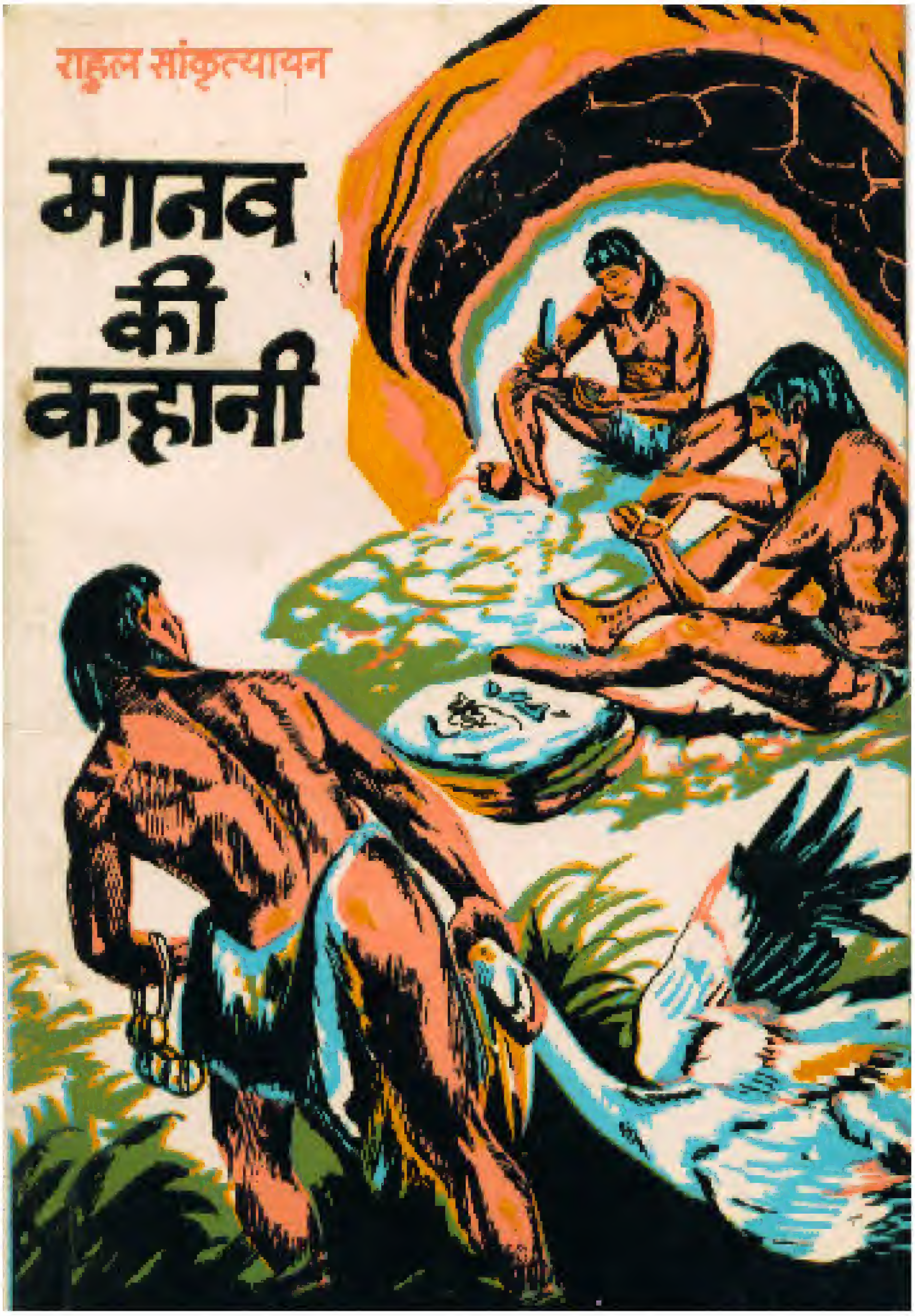
राहुल सांकृत्यायन
मानव
की
कहानी

मानव की कहानी

पहले आदमी भी तो बन्दर की ही तरह का था। उसके पास पहनने को कपड़ा नहीं था । जब जाड़ा आता तो वह ठण्डे पहाड़ों से नीचे उतर आता। उसी ज़माने की बात है। तो एक अम्मा थी, उसके एक बेटा और एक बेटी थी। घर तो उनका कोई था नहीं। पेड़ के नीचे रहते। बरसा से बचने के लिए कुछ था ही नहीं। भीग जाते, फिर शरीर सूख जाता । एक दिन अम्मा ने छिपे रहकर एक खरगोश पर पत्थर चला दिया। पत्थर लगते ही वह उछलकर वहीं ठण्डा हो गया। अम्मा जानती थी, बच्चे भूखे हैं कल से, रोते-रोते सो गए हैं। गई वह मरे हुए खरगोश को उठाने। ले गई उसे अपने घर, जहां उसके दोनों बच्चे, मूमा और मूमी, सो रहे थे। जगाया उन्हें। उसके बाल थे न बदन पर! धोते तभी जब बरसा होती। अम्मा ने झट से संभालकर एक ओर से पत्थर की छुरी निकाली। हां, उस समय लोहा, पीतल, तांबा आदि धातु कहीं भी न थी। छुरी बड़े कड़े पत्थर की थी। उसको ऐसे तोड़ा था कि धार निकल आई थी। खरगोश के चमड़े को एक ओर हटाकर एक टुकड़ा मूमी के मुंह में दिया। और मूमा को भी इतना बड़ा टुकड़ा दिया कि जिससे वह न बोल सके। उस समय आग नहीं थी, कि उस खरगोश के गोश्त को भून लिया जाता। कच्चे गोश्त को जल्दी-जल्दी थोड़े ही खाया जाता! इसलिए दांत से ज़ोर लगाकर खा रहे थे मूमा-मूमी। मूमी चालाक थी। वह थोड़ा कूंचकर निगल गई। अम्मा ने दूसरा टुकड़ा दे दिया। मूमा ने भी निगल जाना चाहा, पर बड़ा टुकड़ा गले में अटक गया। अम्मा ने तुरन्त गर्दन पर थप्पड़ लगाया, नहीं तो बेचारे मूमा की न जाने क्या हालत होती। कच्चा मांस था न, इसलिए खाने में बहुत देर लगी। आधा खरगोश खाया गया, आधा रख लिया। सांझ होने को आई। पहाड़ी गुहा में जाने को कहा, तो मूमी नहीं मानी। अम्मा ने मारा, तब मूमी गई। गुहा का छोटा-सा मुंह था, जिसपर बहुत सारी लकड़ी लगा रखी थी। हवा चलने लगी। सर्दी से दांत कटकटाते। जाकर तीनों पिल्ले की तरह लेट गए। रात को हाथी चिंघाड़ता, शेर दहाड़ता, बेचारे तीनों डरते। मूमी अम्मा की बात मान गई, अच्छा हुआ न![1]

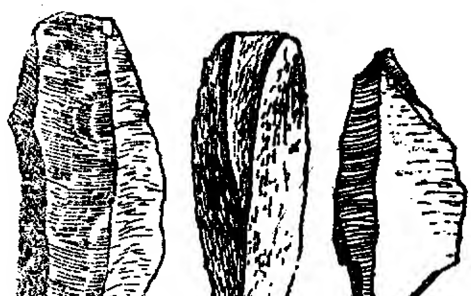

पत्थर-युग के हथियार—छुरियां

2

हां, पीछे तुम्हें मूमा-मूमी की कहानी सुनाई है। उस समय बहुत दुःख था। आदमी आग भी नहीं जानता था। कच्चा ही मांस दांत से काट-काटकर खाना पड़ता था। कई हज़ार नहीं लाख बरस बीत गए। एक दिन चुन्नी—मूमा की अम्मा—जंगल छोड़कर भागी। जंगल में आग लग गई थी। जानवर भी भाग रहे थे। कहीं पेड़ की सूखी डालियां हवा से रगड़ खा रही थीं। बस आग लग गई। पहले सूखी घास और सूखी लकड़ी, फिर दूसरे पेड़ भी धू-धू कर जलने लगे। बेचारे सभी जानवर नहीं भाग सके थे। एक हाथी भी जलकर मर गया था। एक सूअर भी जल मरा था।

मूमा-मूमी बड़े थे। मूमा छः बरस का और मूमी आठ बरस की। आग बहुत दिन तक नहीं रही। दूसरे ही दिन ऐसी बरसा हुई कि कुछ न पूछो। आग बुझ गई। दोनों बच्चे अम्मा के साथ जलकर काले हो जंगल को लौटे। देखा—पूरा का पूरा सूअर

1. प्रस्तर-युग की कहानी

भुनकर पड़ा हुआ है। ऐसे बहुत मरे हुए थे, नहीं तो भेड़िया, चीता, बाघ मूमा-मूमी को उनके पास आने देते ! अम्मा ने पत्थर की छूरी कमर से खोली। छूरी जल्दी-जल्दी काटने लगी। अम्मा ने एक-एक बड़ा टुकड़ा बच्चों के मुंह में रखा और एक अपने मुंह में। बोल उठी—'ओहो-ओहो !' उस वक्त अभी आदमी बहुत बात नहीं बना सकता था। अम्मा की आवाज़ सुन के मूमा-मूमी ने भी 'ओहो-ओहो' कहा। ऐसा स्वाद आया कि कुछ न बुझो। सूअर बहुत बड़ा था, वह सब थोड़े ही खा सकते थे ! पर उस दिन बहुत खा लिया। सब खुशी के मारे नाच रहे थे। पास के नाले में मटमैला पानी था। पर अम्मा को पानी का चश्मा मालूम था। वहीं जा के तीनों ने कुछ चुल्लू से और कुछ बानर की तरह मुंह लगा के पिया। अभी आदमी भी बानर जैसा ही था। न उसके तन पर कपड़ा था, न खाने-पीने के लिए कोई बर्तन। मिट्टी का भी बर्तन नहीं। धूप तेज़ लगी तो पेड़ के नीचे जा बैठे। बरसा से बचने के लिए कभी गुफा मिल जाती, नहीं तो भीगते रहते।

उस दिन मूमा-मूमी को आग में अपने-आप भुन गए सूअर में बड़ा ही स्वाद आया। दूसरी बार जाने पर देखा कि सिर्फ उसकी हड्डियां ही रह गई थीं। जंगल में मांस के शौकीन कम थोड़े ही थे—लोमड़ी भी थी, काना गीदड़ भी था, बघेरा और चीता, शेर और बाघ, भेड़िया और लकड़बग्घा भी तो थे। लोमड़ी ने मुंह लगाया, बस गुर्रामल-घुर्रामल भेड़िया भी आ गया। उसे देखते ही लोमड़ी भागी, नहीं तो वह उसीको चट कर जाता। भूख मिटाकर भी भेड़िया वहीं बैठ चाट-चूट कर रहा था। बस, बाघ—मंचूरिया का जैसा बड़ा—आ गया गुर्राता हुआ और उसकी आवाज़ सुनकर भेड़ियाराम वहां से भागे ज़ोर से। ये सब जानवर बस मांस ही खाते थे, फल-मूल में हाथ भी नहीं लगाते थे। पर मूमा-मूमी और उनकी अम्मा फल भी खा लेते थे, पत्ते भी खा लेते, जैसे कि मसूरी के बन्दर। अम्मा ने जल्दी-जल्दी अपने भी फल खाए और मूमा-मूमी को भी खिलाए। फिर वह दौड़ी अपनी गुफा की ओर। मूमा-मूमी खेलने में भूल गए थे। अम्मी ने क्या किया, इसका उन्हें पता भी नहीं। दोनों बस निरे बुद्धू थे। एक मोटे-सूखे पेड़ में इतनी आग लगी थी कि उसे बरसा भी नहीं बुझा सकी। अम्मा एक जलती लकड़ी को गुफा में उठा ले गई। आग में और लकड़ी डाले बिना वह बुझ जाती। अम्मा आसपास में सूखी लकड़ी बटोर आग पर रखती जाती।

दूसरे दिन बहुत घूमने-घामने पर एक लोमड़ी का बच्चा दीखा। अम्मा ने बच्चों को मुंह पर हाथ रखकर चुप रहने के लिए कहा, और सरकते पास पहुंच गई। फिर एक पत्थर मारा। बच्चा चित्त हो गया। अम्मा ने किसीको उसका एक टुकड़ा मांस भी नहीं दिया। वह दौड़ी गुफा की ओर। बच्चे भी दौड़े। अम्मा ने आग पर रख दिया छोटी लोमड़ी को। उसे उलटा-पलटा और सब ओर से जलाकर काला कर दिया। अब काटकर चखा, तो सबने 'ओहो-ओहो' कहा। एक-एक टुकड़ा मूमा-मूमी को भी दिया। खाते हुए सब 'ओहो-ओहो' कहने लगे। अब जब कभी उन्हें कोई शिकार मिलता, तो उसे वे पहले आग में भूनते। मूमा-मूमी को अब कच्चा गोश्त पसन्द ही न आता। वे भी सूखी लकड़ी बटोरकर लाते और आग पर डालते रहते। पहाड़ के नीचे गुफा थी। पर जाड़ों में यहां भी सरदी लगती। उस जाड़े में देख लिया कि आग के पास बैठने से सरदी भाग जाती है। अम्मा नाचने लगी, हाथ जोड़ने लगी—'ओह, आग भगवान गोश्त भूनकर नरम कर देते हैं, जाड़ा भगा देते हैं।'

एक दिन शेर आ गया। अम्मा डरने लगी। उसके पत्थर से तो खरगोश मर सकता था, शेर थोड़े ही मर सकता था ! डर के मारे वह रोने लगी, बच्चे भी रोने लगे। रात थी न, आग पर सूखे पत्ते और लकड़ियां और डाल दीं। देखा दिन की तरह सब चीज़ दिखलाई देने लगी। और देखा कि शेर पूंछ दबाए भागा जा रहा है। उस दिन अम्मा को पूरी बात मालूम नहीं हुई। पर एक दिन अम्मा ने देख लिया, समझ लिया कि बड़े-बड़े जानवर—हाथी भी—आग को देखकर भागते हैं। बस, अब अम्मा बराबर पासे में आग और सूखी लकड़ी-पत्ती रखने लगी। 'आग भगवान'—कहकर बच्चों को समझाती।

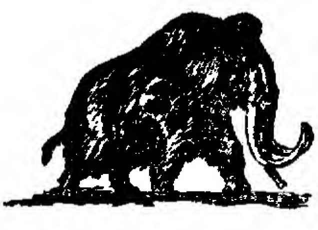

3

हां, तो कल मूमा-मूमी की अम्मा ने, देखा न, कि आग देवता को जान लिया। कितना अच्छा हुआ ! अब आग जला देने पर शेर-बाघ भी भाग जाते हैं। सरदी भी दूर हो जाती आग के पास बैठते ही। जिस दिन गोश्त मिलता, उसको भी अम्मा भून देती। उसका स्वाद भी बढ़ जाता और दांतों को तकलीफ भी नहीं होती। बाद में आग उन्हींकी अम्मा तक नहीं रही। मैंने पहले ही लिखा था न कि वे लोग अकेले नहीं रहते थे। जब जंगल बाघ-शेर-हाथी-चीता-भालू से भरा हुआ हो, उस समय आदमी अकेले थोड़े ही रहना चाहता है ! वे कभी-कभी हड्डी, लकड़ी या पत्थर के हथियारों से बरसात में गहरा गड्ढा खोद देते। उसे खोदने में पचासों मर्द-औरत लग जाते। गड्ढा तैयार

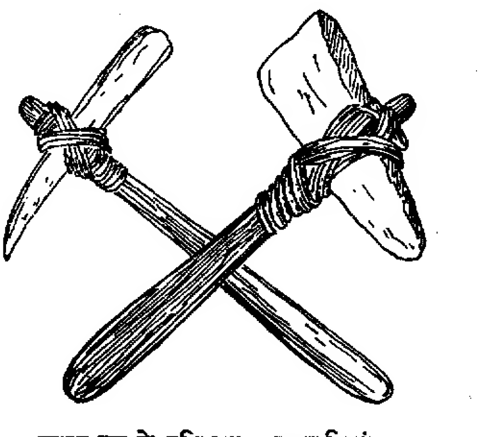

पत्थर-युग के हथियार—कुल्हाड़ियां

हो जाता। रात को सब हाथ में सूखी लकड़ी लेते और बांस में आग जला लेते। हाथी झुंड में वहां जंगली केला और बांस चर रहे होते थे। कई सौ आदमी लकड़ी से चमड़े का बाजा बजाते, 'हो-हो' की आवाज़ करते जाते। आवाज़ सुन हाथी जान लेकर भाग जाते। थी तो वह आग, पर हाथी समझते कि यह तो भूत है, हम हाथियों से भी बड़ा। भागते समय वे पीछे मुड़कर देखते भी नहीं थे। बेतहाशा भागते-भागते उस दिन दो हाथी गड्ढे में गिरे। अब वे ऊपर आ ही नहीं सकते थे। बाकी हाथी जान

लेकर दूर भाग गए। आदमियों ने पेड़ों के नीचे-ऊपर आग लगा दी थी। हाथी भागते ही गए। लोग लौट पड़े। गड्ढे के हाथी भूख से भी मर जाते न, और बहुत दिनों में दुबले होकर सड़ भी जाते न! उन्होंने क्या करा? घास-पत्ती सूखी पहले से ही सजा कर रखी थी। बस, पल में ही आग सुलगाई और गड्ढे में फेंकी। वहां भागने की जगह ही नहीं थी। हाथी बेचारे चिल्लाते और जलते रहे। पचासों लोग सूखी घास को जला-जलाकर गड्ढे में फेंक रहे थे। घंटे-भर तक हाथी चिल्लाते रहे, फिर पहले बच्चा हाथी चुप हो गया, तब बड़ा हाथी भी। लेकिन इतने पर भी लोगों ने उन्हें नहीं छोड़ा। और वे कुछ मोटी-सी सूखी लकड़ियां फेंकने लगे। गड्ढे को भर-सा दिया। बहुत रात हो गई। तब लोग अपने घर लौटे। घर वही गुफा थी, जहां आग जलाकर अम्माएं अपने बच्चों के साथ बैठी हुई थीं। अब शेर-बाघ को भी मालूम हो गया कि आदमी के पास 'धू-धू' देवता आग है। जो कुछ गुफा में था, सबने मिलकर खाया। उस समय कोई नहीं जानता था कि यह मेरी चीज़ है, वह तेरी। अम्मा-माताएं—ही सब काम देखतीं और मरद उनकी बात मानते थे।

दूसरे दिन सवेरे ही सब चले। गोद के बच्चों को भी उठा लिया। बात भी तो बहुत नहीं मालूम थी। वह 'हाय' और 'गूं-गां' करते हाथ हिलाते-हिलाते ही बात करते थे। सबके सब पहुंचे गड्ढे पर। कल की आग बहुत सारी बुझ गई थी। थोड़ी दूर ऊंचे एक झरना था। बात की बात में उन लोगों ने सींग से खोदकर नाली बना दी। पानी गड्ढे में गिरने लगा। आग बुझ गई। पत्थर की छुरियां लेकर सब गड्ढे में उतर नहीं सकते थे। सबसे बड़ी अम्मा की बात वहां सभी मानते थे। उसने माताओं को बच्चों के साथ भेजा। वे गोश्त खाते और कभी बड़ा-सा टुकड़ा ऊपर भी फेंक देते, फिर दूसरा टुकड़ा भी। वे लोग कई दिन में भी हाथी नहीं खा सके। और जब वह सड़ने लगा तो उन्होंने छोड़ दिया।

4

कल मैंने हाथी के शिकार की बात की न? वे नंगे-धड़ंगे लोग वैसे ही थे जैसे चीनी लोग, जैसे तिब्बती लोग। पर वे थे लेप्चा लोगों की जाति के (किरात)। नाक थोड़ी चपटी थी, बाल मुंह पर कम थे, रंग थोड़ा पीला-सा था। अब वे जाड़ों में सिलीगोड़ी के जंगलों में रहते और गर्मियों में कलिम्पोंग या दार्जिलिंग के जंगलों में चले जाते। सैर करने के लिए नहीं, पर खाना ढूंढ़ने के लिए। शिकार मिल जाए तो क्या पूछना! पर शिकार रोज़ थोड़े ही मिलता! तब तक जानवर भी होशियार हो गए थे, वह तो अब आदमी का भी शिकार कर लेते थे। पर आदमी अपनी गुफा में आग रखते थे। उससे जानवर भाग जाते थे। मधु भी आदमियों को बहुत पसन्द था, बच्चे तो उसके लिए जान देते थे। पर मधुमक्खियां बहुत ऊंचे पहाड़ों और पेड़ों पर छत्ता लगाती थीं। आदमी वहां पहुंच तो जाता, पर मक्खियां काट खाती थीं। छोटी मक्खियों के काटने का दर्द बहुत नहीं होता, पर भंवरा जैसी बड़ी मक्खी तो काटकर मार डालतीं।

आदमी फलों और जड़ों को बहुत ढूंढ़ते, कुछ को सुखाकर रख लेते वहीं गुफा में। उस समय एक बड़ी अच्छी बात थी कि औरत-मर्द, बूढ़े-बच्चे सभी साथ रहने लायक काम करते और साथ ही खाते। कोई चीज़ बंटी नहीं थी। सभी चीज़ें सभी की थीं। उनके बच्चे भी 'मेरी-मेरी' कहकर आपस में नहीं लड़ते थे। उनके पास बहुत खिलौने नहीं थे। कुछ मिट्टी के कुत्ते होते, कुछ बकरे, गायें और हाथी भी। अभी आदमियों के साथ रहनेवाला कोई जानवर नहीं था। कुत्ता भी पास नहीं आता था क्योंकि उस समय उसको भी तो आदमी मारकर खा जाता था। तब आदमी कोई जानवर नहीं छोड़ता था। आदमी का बच्चा बिल्कुल बन्दर के बच्चे जैसा था। बहुत छोटा बच्चा होने पर अम्मा उसे गोद में दबाए फिरती, नहीं तो वह अपने-आप पैर से अम्मा के पीछे-पीछे चलता या गुफा के बाहर खेलता। उसे डर भी बहुत रहता बाघ का, शेर का, हाथी का। पर जब ऐसे जानवर आते, बच्चे गुफा में भाग जाते, जहां अग्नि देवता जलते रहते। भूख लगती तो गुफा में बैठी बुढ़िया दादी से कुछ मांगकर खाते। जो कुछ रहता वह दे देती। वैसे तो उनकी अम्माएं ही उनको देती रहतीं। उनकी बोली ही क्या थी, उतनी भी नहीं जितनी उस दिन जया[1] जानती थी जब वह मसूरी में घर से निकल गंगा मौसी को ढूंढ़ने गई थी। बच्चे कभी-कभी झगड़ पड़ते तो पीटे भी खूब जाते थे।

आदमी पच्चीस-पच्चीस मिलकर रहते। अकेले कैसे रहते? तब न वह घेरकर शिकार मार सकते थे, न कोई काम कर सकते थे। पेट भर जाता, तो गाते-नाचते बहुत। फिर कभी एक गुफा के रहनेवाले दूसरी गुफा के रहनेवालों से झगड़ा करते, फिर तो

मानव हिंसक जन्तुओं से अपनी रक्षा करता था।

1. लेखक की बेटी

पत्थर से या डंडे से सिर फोड़ देते, मार भी डालते और मरे हुओं को खा भी जाते। कैसे आदमी थे वे!

कोई-कोई बच्चे अच्छे होते थे। जब कोई बदमाश लड़का कमज़ोर को मारता, तो अच्छा लड़का उस बदमाश लड़के को मार देता। सब लड़के अच्छे लड़के को प्यार करते, उनकी बात को भी मानते थे। मूमा भी ऐसा ही लड़का था, बड़ा तगड़ा और बहुत अच्छा भी।

5

एक कहानी है—लूलू और लूली दोनों भाई-बहन थे। अम्मा उनको बहुत प्यार करती थीं। एक दिन लूलू को जुकाम हो गया। नंगे तो वे लोग रहते ही थे। भीग भी गया और सर्द हवा भी लगी, जिसमें उसे बुखार भी आ गया। उस वक्त न डाक्टर था न अस्पताल। गांव, घर भी न थे। बूढ़ी दादी जो दवा बता दे, बस वही रोगी को दी जाती थी। लूलू की बूढ़ी दादी ने कहा—'इसे तो भूत लगा है, अग्नि देवता को किसी जानवर की बलि चढ़ाओ। तब यह ठीक हो जाएगा।' बहुत करने पर एक चूहा मिला छोटा-सा। मारकर उसे आग देवता को दिया गया। भुनते वक्त गन्ध फैलने लगी। लूलू की नाक में भी आई। उसने अम्मा को बुलाकर चुपके से कहा—'चूहा तो मुझे खाना है।' अम्मा डर गई—आग देवता कहीं नाराज़ न हो जाए। बूढ़ी दादी से पूछा, तो उसने कहा—'आधा जल जाए तो बाकी लूलू को दे दो। यह तो देवता का प्रसाद होगा।' लूलू को प्रसाद मिला तो उसने चुपके से लूली को दिया, और लूली ने दूसरी लड़कियों को बुला लिया। उसने कहा—'देवता का प्रसाद अकेले थोड़े खाना होता है! हम सब मिलकर खाएंगे। बुखार हल्का ही था, पर मुंह का स्वाद बिगड़ गया था। लूलू को न फल अच्छे लगते थे, न गोश्त, मधु ही। अम्मा बेचारी बहुत दुःखी थी। वह आग देवता से कहती—'हे आग भगवान्, मेरे लूलू को अच्छा कर दो।' लूलू भी अम्मा की तरह हाथ जोड़कर आग देवता को नमस्ते करता। तीसरे दिन बुखार जाता रहा। चार दिन बाद फिर लूलू दौड़ने-खेलने लगा। लूली भी खुश थी। गुफा के सारे लोग खुश थे।

6

हड्डी और पत्थर के हथियारों के साथ लाखों बरस तक आदमी रहा। बस, आग भगवान ही उसके पास तक आ गए थे। बर्तन की जगह केले के पत्ते या दूसरे पत्ते थे।

हां तो, एक दिन की बात है। चार-छः मील के फासले पर दो गुफाएं थीं, जिनमें दो गिरोह थे। एक दिन पहाड़ में लगे मधु के छत्ते को उतारने के लिए उमा दादी के आदमी गए। पर सुमा दादी के आदमी पहले से ही उसपर नज़र लगाए हुए थे। रात को मधुमक्खियां छत्तों में घुस जाती हैं, उसी वक्त उमा दादी के लोग गए। वे छत्ते तक पहुंच ही रहे थे कि सुमा वाले लोग भागे। बस फिर क्या था, चिल्लाने लगे। उमा वाले थोड़े थे। सुमा वालों ने उन्हें बहुत मारा। मरा तो कोई नहीं, पर उनमें से कुछ का सिर फूट गया, लोहूलुहान हो गए। सब जान लेकर भागे घर। सुमा दादी ने गुस्से में कहा—'ऐसी मजाल!' अगले दिन सबेरे ही खाल नगाड़ा बजा। पत्थर और हड्डी के हथियार लेकर सुमा वाले लोग चल पड़े। उमा दादी के लोग भी सजग थे। वे अपनी गुफा में बैठे थे। जैसे ही दुश्मन पास आए कि वे पत्थर मारने लगे। हां, लड़नेवालों में पुरुषों से ज्यादा स्त्रियां थीं। सब बड़ी बहादुर थीं। पत्थर की चोट खाते हुए भी वह गुफा में पहुंच गए। सुमा ने ललकारा उमा को—'आ जा, क्यों छिपी बैठी है?' उमा भी डरनेवाली नहीं थी। दोनों ओर के मर्द-औरत गुत्थमगुत्था हो गए। पत्थर के हथियार से ही वे वार नहीं करते, बल्कि दांत से भी काट रहे थे। उमा दादी के दस आदमी वहीं मर गए। सुमा के भी पांच। बाकी भाग गए। कैसे लोग थे! एक ज़रा-से मधु के लिए न!

एक गुफा में रहनेवाले दूसरी गुफा के रहनेवालों से झगड़ते थे।

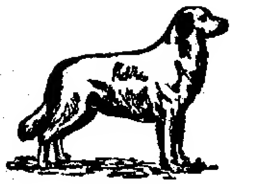

7

सुनो, मूमा-मूमी ने एक कुत्ता पाल लिया। पहले कुत्ते उसी तरह जंगल में रहते थे जैसे लोमड़ी और काना गीदड़। आदमी उन्हें देख के भाग जाते। भेड़िये भी तो कुत्ते के ही भाई-बन्द हैं, वह काटकर खा जाते। बच्चों की तो वे घात में रहते ही थे। उस समय आदमी अपने खाने के लिए कुत्तों का भी शिकार करता था। मूमा-मूमी छोटे-छोटे बालक थे। पर वे भी शिकार में गए थे। उस दिन कई कुत्ते-कुतियां मारी गईं। एक छिपी जगह में सात-आठ कुत्ते के बच्चे एक के ऊपर एक रेंगते कांय-कांय कर रहे थे। मूमा की अम्मा की नजर उनपर पड़ गई। सभी दौड़े उधर। अभी तक तो आदमी ने बच्चे-कुत्ते या बड़े कुत्तों को मारकर ही खाया था। मूमा-मूमी वहां गए तो कुत्ते के बच्चे उन्हें बहुत प्यारे लगे। मूमा ने दो उठाए और मूमी ने दो। दूसरे बच्चे भी दौड़ आए। सबने बच्चे उठाए। पर बच्चे तो दो ही तीन कुतिया के थे। उनकी आंखें भी नहीं खुली थीं। वे तो दूध-भर ही पीते थे। सभी लड़कों ने जिद करके बच्चों को मार-कर खाने नहीं दिया। वे उन्हें गोश्त देते, पर वह खाते नहीं थे। एक-दो दिन में सब पिल्ले मर गए। मूमा-मूमी की अम्मा बहुत होशियार थी। उसने शहद में पानी मिलाकर उन्हें चटा दिया। उस समय तो आदमी के पास कोई जानवर ही नहीं था कि उसका दूध देते। अम्मा चारों बच्चों को तो नहीं बचा सकी, पर दो जी गए। पिल्ले का नाम रखा था—चिल्ला और पिल्ली का नाम रखा था—चिल्ली। दोनों की आंखें खुल गईं। फिर चिल्ला-चिल्ली गोश्त भी खाने लगे। मोटे हो गए। थे छोटी जात के, नहीं तो वे काटते भी आदमी को। मूमा-मूमी उन्हें गोद में लिए घूमते रहते। अपने साथियों को भी खेलने देते। दोनों छः महीने में बड़े हो गए। दोनों लाल रंग के थे। मूमा-मूमी उनको गोद में ही सुलाते थे। जाड़ों में कुत्तों के पास रहने से सर्दी कम हो जाती है न !

ये पहले कुत्ते थे न, इनमें उतनी अकल नहीं थी। तो भी बुलाने पर दौड़ते। उन्होंने तो कुत्ते देखे ही नहीं, या देखे तो मरे हुए जो भूने जाते थे। उनको पता भी नहीं लगा, ये हमारे ही हैं। एक दिन दोनों बच्चों के साथ जा रहे थे। उन्होंने खरगोश को पास से दौड़ते देखा। चिल्ला-चिल्लाकर दोनों दौड़े। वे क्या हाथ आते ? पर उधर से कुछ आदमी आ गए। खरगोश मुड़ा, और चिल्ला-चिल्ली के मुंह में आ गया। दोनों ने झकझोर के उसे मार दिया और गोश्त खाने लगे। मूमा-मूमी के मुंह में पानी आ रहा था। पर पास आने पर चिल्ला-चिल्ली गुर्राते। सारा गोश्त उनसे खाया नहीं गया। बाकी को मूमा-मूमी ने भूनकर खा लिया। सारे लोगों में हल्ला हो गया—'कुत्तों ने शिकार किया।' सब सोचने लगे—'जो ऐसे दस-बीस कुत्ते होते, तो कितना अच्छा होता !

बस, तब से कुत्ता आदमी का दोस्त बन गया।

8

रोज़ नाम बदलकर कहानी कहने में बेटों को समझना मुश्किल हो जाएगा, इसलिए आदमी के बच्चों का नाम मूमा-मूमी ही रहेगा। पर वह लूला-लूली नहीं होंगे। बहुत हज़ार बरस हो गए। कनैला के जंगल में वे ही लेप्चा जाति (किरात) के लोग रहते थे। वह झोंपड़ी में रहते थे। पचास-साठ मरद-औरत, बूढ़े-बच्चे थे। उनकी एक ही झोंपडी थी, बहुत भारी, घास-फूस की बनी। एक कोने में आग-देवता थे। लोग जंगल से शिकार मार लाते, कभी ताल—पानी के तालाब—में से मछली मार लाते। देखा, एक दिन चुन्नू-मुन्नी भी अपने दोस्तों, मौसी के बच्चों के साथ तालाब में घुस गए—हम भी मछली मारेंगे। उन्हें अम्मा ने और मौसियों ने भी पानी में जाने से मना किया। सब लोगों के जंगल में घुस जाने पर बच्चों की सेना तालाब पर—और फिर देखा-देखी पानी में। किनारे पर ही रहकर वह हाथ से मछली टोहने लगे : ऐसे तो मछली कहां हाथ आती ! मूमा के हाथ में एक केकड़ा आ गया। उसे पानी से ऊपर निकाला और उसके बहुत-से बड़े-बड़े पैरों को देखा, तो पानी में फेंक दिया और डर के मारे कांपने लगा। एक बड़े, पर होशियार लड़के ने समझाया—यह तो खाने की मछली थी। और किसी ने नहीं पकड़ी, पर मूमा ने इत्ता बड़ा केकड़ा पकड़ा। अम्मा और मौसी देखकर कित्ती खुश होतीं ! अब मूमा को अफसोस होने लगा। पर, पानी में फेंका केकड़ा कहीं हाथ आता ! लड़के मछली पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। इसी समय मौसी की एक लड़की जोर से चिल्ला उठी—'मर गई !' और पानी से बाहर उंगली पकड़कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। उसने दाहिने हाथ का अंगूठा पकड़ रखा था। मूमा ने ज़रा-सा हटाकर देखा, तो उसमें से खून बह रहा था। सभी बच्चे घबरा गए। मौसी की बेटी को बहुत पीड़ा थी। उसकी दोनों आंखों से आंसू की धार बह रही थी। वह दर्द के मारे ज़मीन पर लोटकर रो रही थी। दूसरे बच्चे उसे उठाकर दादी के पास झोंपड़ी में ले गए। दादी ने कहा—'हाथ में मछली आई थी?' 'हां आई थी। मैंने ज़ोर से पकड़ा। वह छटपटाने लगी। तभी मेरे अंगूठे में कांटा-सा लगा। बहुत दर्द है। हाय अम्मा, मरी !'

दादी अम्मा ने कहा—'मुन्नी, मत रो, वह सिंही मछली थी। उसका कांटा बहुत तेज़ होता है और काटने पर बहुत दर्द होता है।' एक दिन मछली मरी, तो उसमें सिंही भी आई। अम्मा ने कहा—'यह है लाल-लाल सिंही।' अभी भी वह ज़िन्दा थी, कुलबुला रही थी। अम्मा ने छोटी मुन्नी से कहा—'लेगी मुन्नी ?' कहते ही उसे हाथ से उठा लिया।

उस समय आदमी न नमक को जानते थे न खाते थे। नमक लगा देने से सिंही मरने लगती है और कांटा मारना भूल जाती है। अम्मा ने भूनकर दिया तो सबको सिंही बहुत मीठी लगी। सिर के बीच में ज़ोर से पकड़ लें तो सिंही कांटा नहीं चलाती।

9

मूमा-मूमी अब भी जंगल में ही रहते। कनैला के पास पहाड़ नहीं थे, इसलिए जहां जाते, झोंपड़ी बना लेते। एक दिन बच्चे अम्मा और मौसियों के साथ नदी के किनारे चले गए थे। बच्चे वहीं शिकार का खेल खेल रहे थे। तीर-धनुष भी उनके पास था। तीर पर हड्डी या कड़े पत्थर का टुकड़ा बांधते थे। अभी तो आदमी को न लोहे का पता था न तांबे का। बच्चे तो खेल कर रहे थे। बस उन्होंने तीर पर गोंद लगा दिया था और उस-पर कांटा खोंस रखा था। एक दिन सूमा ने एक चिड़िया पर तीर फेंका। लग गया। छोटी चिड़िया को वह कांटा भी बहुत लगा। बेचारी फड़फड़ाने लगी। बच्चों ने उसे पकड़ लिया। बहुत छोटी थी, क्या करते?

एक दिन मूमा-मूमी और घर के सभी बच्चों को बहुत आश्चर्य हुआ। उस दिन भी वह नदी के किनारे खेल रहे थे। नदी के पार देखा, बहुत-से लोग हल्ला करते आ रहे हैं। पहले तो मालूम नहीं हुआ कि क्या बात है। नजदीक आए तो देखा, अपने गांव के भी लोग हैं और दूसरे गांव के भी। उस समय गांव कहां थे? बस वह बड़ी सारी झोंपड़ी हो गांव थी। दूसरे गांव के लोग भी किरात-लेप्चा ही थे। वह एक-दूसरे की बोली समझ लेते थे। उनमें आपस में बहुत कम ही झगड़ा होता था।

पर, देखा, उन्होंने तीन दूसरी तरह के आदमी भी पकड़ रखे थे, जिनमें एक औरत भी थी। पर वह बहुत काले थे, ठीक कोयले जैसे। उनको देख मूमा-मूमी की सारी पलटन डर गई। वह तो साफ और कुछ पीले रंग के थे। उनसे बात पूछते तो, वे क्या कह रहे हैं, किसीकी समझ में नहीं आता था। वह दूसरी ही बोली बोल रहे थे। उनको बहुत पीटा था। बहुत रो रहे थे। बच्चे भी पास में जाकर देखने लगे। मूमा ने औरत की देह पर हाथ रगड़ा। कैसा बेवकूफ लड़का था! वह समझता था, काला रंग देह में लगा रखा है। वह भी तो जब भूत का खेल खेलते तब काला रंग देह में लगा लेते थे।

आज बच्चों को मालूम हुआ कि काले भी लोग होते हैं और उनकी बोली दूसरी भी होती है। वे दूसरे दिन इसी बात की चर्चा कर रहे थे, तो एक बड़े लड़के ने कहा—'तीनों को मार के आग देवता की पूजा कर डालो, फिर उनके भुने मांस को भी खा डालो।' हां, उस समय लोग ऐसे ही जंगली थे। उन्हें अच्छी बात का पता ही नहीं था। वे बस इतना ही जानते थे कि अपने घरवालों को प्यार करना चाहिए। उनको खाना-पीना सब देना चाहिए। अपने ही पेट को भरना बुरा है। वे लोग दिन में डरते नहीं थे। पर रात होते ही सब जगह भूतों को देखने लगते। बड़े भी अकेले बाहर नहीं निकलते थे। कैसे लोग थे!

10

नये चुन्नू और मुन्नी को एक दिन छोटा-सा हिरन का बच्चा मिल गया। वह अभी दो ही चार घंटे पहले पैदा हुआ था। शिकारी आ गए। हिरनी अम्मा तो भाग गई, पर बच्चा नहीं भाग सका। चुन्नू और मुन्नी वहां पहुंच गए। बच्चा प्यारा लगा। उन्होंने पकड़ लिया। घर ले आए। चमड़े की रस्सी से उसे बांध दिया। अभी तो वह दूध पीनेवाला था, मांस तो खाने वाला ही नहीं था। लोगों ने बहुतेरा चाहा—आग देवता को चढ़ा दें, पर बच्चों ने ऐसा नहीं करने दिया। वे नरम-नरम घास उसके मुंह में दे देते। पहले तो नहीं खाया। दूध न मिलने से वह मरनेवाला था। वहीं मौसी का एक छोटा-सा बच्चा था। इसलिए मौसी ने हिरन के बच्चे को भी दो-चार दिन अपना दूध पिलाया। फिर तो वह घास खाने लगा। उसी समय कुतिया के भी बच्चे पैदा हो गए। अच्छी कुतिया थी। उसने भी अपने बच्चों को दूध पिलाया। हां, अब आदमी के पास कुत्ते रहने लगे थे। वह शिकार में मदद करते थे। रात को रखवाली करते थे। अपनों को नहीं काटते थे। दूसरों को देखते भौंकने लगते थे। हिरन को वह भी पहचान गए थे, इसलिए उसे तकलीफ नहीं देते थे।

छोटे हिरन के बच्चे को लेकर आदमी के बच्चे खूब खेलते थे। कुत्ते के पिल्ले भी दौड़कर खेल दिखाते थे। हड्डी बहुत मिल जाती थीं। कुछ चमड़ा-झिल्ली भी देते थे। सब लड़के नरम-नरम हरी घास काटकर लाते थे। किससे? पत्थर के चाकू से। हाथ से भी नोच लाते थे। धीरे-धीरे हिरन बढ़ गया। वह हिरनी थी, हिरन होती तो उसके सींग होते और चुन्नू-मुन्नी के दिक करने पर सींग चला देती। मुन्नी उसका सिर सहलाती। चुन्नू उसके मुंह के पास हाथ कर देता। हिरनी चाटने लगती। चुन्नू उसका मुंह चूमता और मुन्नी भी। कुत्तों और पिल्लों को तो अपने खाने में से देना पड़ता। हिरनी तो सिर्फ घास खाती थी।

हिरनी भी जानती थी कि अकेले जंगल में जाना ठीक नहीं है। मुन्नी बहुत समझाती थी—हिरनी रानी, जंगल में शेर भी रहता है, बाघ भी, भेड़िया भी। तुम्हें अकेले में पा वह चट कर जाएंगे। हिरनी बस बच्चों के साथ घूम लेती, दौड़ भी लेती। उसके साथ कोई नहीं दौड़ सकता था। एक दिन चुन्नू ने ज़िद की। हिरनी दौड़ी तो उसके सामने चुन्नू की चाल कछुए-सी थी। हिरनी बहुत दूर निकल गई। सब बच्चे हंसने लगे, ताली बजाने लगे। हिरनी ने चुन्नू को हरा दिया। एक दिन कुत्ता भी दौड़ा, पर वह भी हिरनी से दूर रह गया, कित्ता तेज़ दौड़ती थी हिरनी!

बरसात में नदी का पानी बढ़ गया। हिरनी परले पार छूट गई। रात आने लगी। सब लोग डरने लगे—रात को उसे ज़रूर भेड़िया खा जाएगा। सब बच्चे ज़ोर-ज़ोर से पुकार रहे थे—हिरनी आ जा, हिरनी आ जा। रात आ रही है। हिरनी सोचती रही, सोचती रही, फिर छलांग मारकर पानी में कूद पड़ी। बाद में ऊपर तैर आई।

11

हां तो, काले-पीले दो तरह के आदमी थे ! आपस में उनके झगड़े होते ही रहते। उनसे क्या लेना ? वह तो जंगली लोग थे। आजकल तो बहन-भाई भी आपस में झगड़ पड़ते हैं। पर पापा जानते हैं कि दोनों बच्चे जल्दी ही झगड़ना छोड़ देंगे, नहीं तो लोग उनको जंगली कहने लगेंगे। एक बार चुन्नू और मुन्नी ने गजब की बात कर डाली। उस वक्त जौ, गेहूं, चावल या आम-जामुन सब जंगल में होते थे जैसे और घास-फूस। और सब एक देश में होते भी न थे। एक दिन चुन्नू ने देखा, पकी जौ को बात थी। उसमें अनाज-दाने को वहां पड़ा देखकर उठा लिया और चुपके से मुन्नी के कान में कहा—'एक खेल खेलेंगे। बस दाने को जमीन में डाल देंगे।' उन्होंने वैसा ही किया। जौ जम गए। फिर पानी बिना मुरझाने लगे। सूख गए होते, पर पानी बरस गया। जौ बड़े-बड़े हो गए। बस अपनी हिरनी को छोड़ दिया, वह चरने लगी। अब घास लाने के काम से छुट्टी मिल गई। चुन्नू ने बहादुरी दिखलाई। फिर तो सारे ही लड़के जौ लगाते और हिरनी को उसमें चराते। अभी आदमी ने अनाज खाना नहीं सीखा था।

जंगल में घास और पानी कम होता तो जानवर दूसरे जंगल में चले जाते। आदमी अपनी झोंपड़ी छोड़ उनके पीछे दूसरी जगह जाते। जानवर का खाना था घास और आदमी का था जानवर। आदमी जब जंगल में दाना डालने लगे, तो उनसे उगी हरियाली को देखकर कुछ दिन और ठहर जाते। दस-पांच दिन और झोंपड़ी छोड़ना नहीं होता। पुरानी झोंपड़ियों छोड़ते चुन्नू-मुन्नी और उनके साथियों को बहुत दुःख होता। कभी कह भी देते—'हम तो यहीं रहेंगे, हमें यह जगह पसन्द आती है।' पर जब जानवर वहां से चले गए और तालाब भी सूख गए तो वहां रहकर वह खाते-पीते कैसे ! रो-गाकर बच्चे भी चले जाते।

एक बार ये लोग एक पहाड़ वाले जंगल में रह रहे थे। वहां

मानव की पहली किश्ती लकड़ी का एक लट्ठा थी।

क्या देखते हैं, एक बहुत बड़ा अजगर है। जान पड़ता था, एक बड़ा-सा पेड़ ही है। काले मुंह वाले बानर आ गए। एक बानर बहुत नटखट था। संभल के न रहता तो अजगर उसे पकड़कर निगल ही गया होता। बन्दर बहुत फुरतीला होता है, और अजगर बहुत सुस्त। जब तक वह बानर को पकड़ने के लिए मुंह उधर फिराए, तब तक वह कूदकर दूसरी ओर चला जाता। एक बार वह कूदकर अजगर की पीठ पर बैठ गया। अजगर दौड़ा, और देह भी हिलाई, पर बन्दर वैसे ही बैठा हंसता रहा। दूसरे बानरों की हिम्मत नहीं हुई। पर दूसरे ताली पीटते तमाशा देखते। लोग उस बानर को बहादुर कहने लगे।

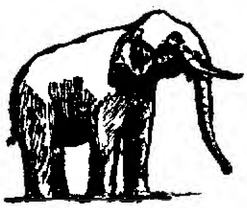

12

चुन्नू-मुन्नी पहाड़ में रहते थे। एक गुफा में। वहां से दूर-दूर तक दीखता था। एक दिन देखा, एक शेर चला जा रहा था, उसके आगे-आगे बन्दर जा रहा था। दादी ने बतलाया था कि शेर फल नहीं खाता, और बन्दर गोश्त नहीं खाता। पर शेर बन्दर का मांस तो खा सकता था। फिर बन्दर ने न जाने कैसा इशारा किया, शेर ठहर गया। बन्दर अकेले जाकर एक पेड़ पर चढ़ गया। वहां पास में नीचे छोटी-सी नदी बह रही थी। वहां तीन-चार जंगली गायें चर रही थीं। गायें उस समय सारी जंगली थीं। बन्दर ने जोर से कहा—पू ! शेर एक छलांग में पेड़ के नीचे आया। और दूसरी छलांग में एक गाय के ऊपर उसके दांत और दोनों पंजे। गाय 'बां' करके गिर पड़ी, दूसरी गायें भाग गईं। शेर ने खून भी पिया और काट-काटकर मांस भी खा लिया। चुन्नू और मुन्नी कहने लगे—'क्यों बन्दर ने गाय मरवाई ? काना गीदड़ मरवाता, तो बात भी थी, शेर का जूठन उसे मिल जाता।' मुन्नी ने कहा—'बन्दर समझता है कि शेर मेरा दोस्त है, मैं भी बड़ा आदमी हूं। शेखी मारना उसे अच्छा लगता है। वह नहीं समझता था कि जिस दिन शेर को शिकार ने बिना भूखा रहना पड़ेगा, उस दिन उसे वह नहीं छोड़ेगा।' उस दिन से मुन्नी बन्दरों को देखते ही गाली देती, उनपर पत्थर भी फेंकती। कोई-कोई कहते हैं—'ऐसा हुआ नहीं। यह किसीने कहानी गढ़ ली है। किसी दादी ने ही गढ़ी होगी। बच्चे उन्हें दिक करते हैं—कहानी कहो, कहानी कहो। बेचारी रोज कहां से तीन-तीन, चार-चार कहानियां लावे !'

बहुत दिन हो गए, एक दिन चुन्नू-मुन्नी को जंगल में घूमते नीचे उतरने पर एक छोटा-सा बानर का बच्चा पड़ा मिला। हाथियों के झुंड में एक बहुत बड़ा पहाड़-सा हाथी मालिक था। दूसरा हाथी जब बड़ा हुआ तो मालिक ने मार भगाया। अब वह भी तगड़ा हो गया था। आया लड़ने को। दोनों खूब सूंड़ से सूंड़ मिलाकर लड़े, दांत से दांत रगड़े। एक का आधा दांत भी टूट गया। दोनों लहूलुहान हो गए। अन्त में मालिक हाथी जान लेकर भागा। जब दोनों पहाड़-से हाथी चिंघाड़कर लड़ रहे थे, उसी समय एक बंदरिया की गोद से बच्चा गिर पड़ा। अम्मा बंदरिया की हिम्मत न हुई कि नीचे उतरकर बच्चे को ले जाए। सभी बन्दरों के साथ वह भी उस जंगल से भागी।

हाथी भी लड़कर चले गए। बच्चा पों-पों करते थक गया था। मुन्नी ने मारने के लिए पत्थर उठा लिया। फिर उसे अकेला देखकर दया आ गई। पास गई तो बच्चा कांपने लगा। उसने उठा लिया। अंगूठा मुंह में दिया तो वह चूसने लगा। जानता होगा दूध पी रहा है। भूखा था बेचारा। फिर फल को निचोड़ कर दिया। बच्चा तो सचमुच खेलने-खेलाने में उस्ताद निकला। वह कभी चुन्नू-मुन्नी की गर्दन पर चढ़ जाता, कभी पीठ पर। पके फल देखता तो दौड़कर पेड़ पर चढ़ जाता, और डालियों को हिला देता। बहुत-से फल भद-भद नीचे गिर पड़ते। चुन्नू ने कहा—'इससे हम फल का शिकार करते हैं, जैसे कुत्ते से जानवरों का शिकार।'

13

बहुत हजार बरस हो गए। अब के मुन्नी बड़ी थी और चुन्नू छोटा। थे तो छः ही सात बरस के, पर बहुत होशियार थे। अब लोग अपने पत्थर के हथियारों को घिसकर चमका देते थे। जैसे-तैसे पत्थर के नहीं, सबसे बड़ी चकमक पत्थर से छुरी, कुल्हाड़ी बनाते। उससे लकड़ी भी काट लेते। धार भोथरी होती तो फिर रगड़ लेते। गुफा के पास ही कड़े पत्थर थे। मुन्नी भी पत्थर उठा लाई। वैसे दोनों भाई-बहन लड़ते रहते, पर बांट-चोटकर अपनी चीज़ें खाते-पीते। वह पत्थर रगड़कर अपनी छुरी बना लेते। फिर उससे छोटा डंडा काट लेते। पहाड़ के नीचे बड़ी-सी झील थी। अम्मा-पापा और दूसरे लोग वहां मछली मारने जाते। लोग जाल भी बनाना नहीं जानते थे। पत्थर के हथियारों और सींग के नोंकदार भालों से बड़ी मछलियों को मारते थे। उन्होंने नाव भी बना ली थी। कैसे? पत्थर के

मानव पत्थर के औज़ार बनाने लगे थे।

हथियारों से नरम पेड़ काटकर गिरा देते! सूख जाता तो एक ओर आग लगा देते। जब एक-तिहाई जल जाता तो आग बुझा देते और पत्थर के ही हथियारों से कुरेद-कुरेद बहुत-सा कोयला निकाल देते, थोड़ा और खोद देने से नाव बन जाती। उसीपर बैठकर वे लोग शिकार करते। जाड़ों में तो मंचूरिया से भी

फिर मानव ने डोंडी बनाना सीख लिया।

आगे उत्तर की तरफ से बहुत-सी चिड़ियां झील में आ जातीं, क्योंकि उधर जाड़े में बहुत सर्दी होती, बरफ पड़ जाती। खाने की चीज़ें बरफ में दब जातीं, बेचारी भूखी हो जातीं, इसीलिए अपने पंख के विमान पर चढ़कर तिब्बत होती चली आतीं। आदमी तीर से चिड़ियों को मारता। मुन्नी के पापा ने एक और चालाकी सीख ली थी। चिकने पत्थरों के साथ आदमी ने पहले-पहल मिट्टी के बर्तन बनाए और उनको आग में पकाकर लाल कर लिया। इसमें पानी गरम हो जाता। पानी पहले झिल्ली में ही ढोया जाता था, अब मिट्टी के बर्तन में भी। मुन्नी के पापा ने मिट्टी की एक हांडी सिर पर डाल ली। आग पर बहुत रखने से वह काली हो गई थी। आंखों से देखने के लिए हांडी में दो छेद कर लिए थे। बस रात को हांडी का चेहरा लगाकर झील में उतर जाते। धीरे-धीरे पानी में डूबते-सरकते। चिड़ियां समझतीं—यूं ही कोई हंडिया डोल रही है। वह चिड़ियों में जा, टांग पकड़कर पानी के भीतर खींच लेते। बेचारी चिड़िया फड़फड़ा भी नहीं सकती कि दूसरों को खबर दे सके। नीचे थोड़ी ही देर में वह मर जाती। कमर की रस्सी में चिड़िया को बांधकर फिर हंडिया चलने लगती। इसी तरह रात को बहुत-सी चिड़िया मारकर पानी से बाहर निकलते। जाड़े के दिन होते तो पानी में पहले सर्दी लगती, फिर नहीं। अभी आदमी कपड़ा नहीं बनाता था। रीछ का या भेड़ का चमड़ा ज़रूर पहन लेता था। अब वह गोश्त को कभी आग पर भून लेता, कभी हंडिया में थोड़ा-थोड़ा पका लेता। दादी इसे भी पसन्द नहीं करती, वह कच्चा ही गोश्त खाती थी। उसके दांत थे न, नहीं तो मालूम होता। अम्मा भी कभी-कभी मछली का शिकार करने जाती, पर कम ही।

14

कैसा वह मुन्ना था ? पहाड़ों में सफेद मिट्टी मिलती है, लाल भी, पीली भी। एक दिन अम्मा, पापा, मौसी, चचा सबको गुफा में तस्वीर बनाते उसने देखा। वह तो पूजा के लिए बना रहे थे। उस समय आदमी भूत-पिशाच से बहुत डरते थे। इसलिए भी देवताओं और भूतों को खुश करने के लिए पूजा करते थे। झूठ की बात है, न कहीं भूत है न देवता। उस समय आदमी की अकल ही कितनी थी ! लोहा-तांबा धरती में था, पर इतनी अकल कहां कि उन्हें बांज के कोयले में गलाकर अलग बना लें। देखा ना, चीन में कैसे गांवों में भी लोग कोयला बना रहे थे। हां, तो मुन्ना ने क्या किया ? लाल मिट्टी घोल ली, फिर लकड़ी की छोटी-सी कलम बना ली, फिर गुफा के एक छोर में जा तस्वीर बनाने लगा। पहले बनाया शेर, फिर बन्दर भी। बन्दर पेड़ पर बैठा था और शेर धरती पर। बन्दर हाथ से गायों को दिखला रहा था। फिर मुन्ना ने बहुत-से सूअर भी बनाए और आदमी भी। अपने जैसे। आदमियों के सिर पर बड़े-बड़े बाल थे, औरतों की तरह। मूंछ भी कम ही थी। लेप्चा लोगों की थोड़ी ही मूंछ होती है ना ! फिर मुन्ने ने दो हाथियों को लड़ते भी बनाया। कई दिनों तक मुन्ना तस्वीरें बनाता रहा खेलना भी भूल गया था। वह गुफा के छोर पर काम कर रहा था। सात-आठ दिन बाद उसके एक दोस्त ने सोचा—देखें तो, यह मुन्ना दिन-भर कहां रहता है ? वह मुन्ने के पीछे-पीछे गया। देख लिया। आकर चाचा से चुगली कर दी उसने। चाचा ने जाकर छिपके देखा। मुन्ने ने तस्वीरें बाप और चाचा से भी अच्छी बनाई थीं। और वह सात बरस से बड़ा नहीं था।

मानव गुफाओं की भित्तियों पर शिकार-दृश्य चित्रित करते थे।

सारे लोगों ने सुना। सब आए। मुन्ने ने मर्दों को नंगा बनाया था, जैसे गरमियों में रहते हैं। तस्वीर बनानेवालो में मुन्ना पहला नहीं था। पर तस्वीरों की प्रदर्शनी शायद यही पहली हुई थी। दूसरे गोत-गांववालों ने भी सुना। वह भी देखने आए। चित्रकार मुन्ना कहकर सब लोग उसे बुलाने लगे। तस्वीरें इतनी अच्छी बनी थीं कि कोई-कोई तो, मालूम होती थीं, अभी बोल देंगी।

मुन्ना बड़ों की बनाई तस्वीरों को देखता और आंख, नाक, कान को वैसा ही बनाना चाहता। फिर तो वह अपने साथियों के मुंह, हाथ, नाक को देखकर उसे रेखाओं में खींचता। मुन्ने को यह काम बहुत अच्छा लगता। कई बरस तक देखते-देखते, रेखा खींचते उसे मालूम होने लगा कि सबकी आंखें, सबके कान एक-से नहीं हैं। उसने तस्वीरें खींच-खींचकर कई गुफाएं भर दीं। हज़ारों बरस बीते, कुछ तस्वीरों पर बरसा का पानी गिरा, वह मिट गईं। पर कुछ गुफा के बहुत भीतर थीं। वह धूमिल हुईं, पर मिटी नहीं। आज भी यूरोप में और भारत में भी गुफाओं में ऐसे चित्र मिलते हैं।

15

पत्थर के हथियारों पर तो आदमी आधे मिनियन[1] वर्षों तक गुज़ारा करता रहा। पर उसकी कहानी से बेटे उकता गए होंगे। तो अब मुन्ना-मुन्नी तांबे के ज़माने में पैदा हुए थे। आदमी ने एक बार पहाड़ों में ऐसे ही तांबे का एक टुकड़ा पा लिया था। उसकी धार देर तक तेज़ रहती थी। मुन्नी के पापा ने सोचा—ऐसा ही टुकड़ा और मिल जाता। एक दिन झोंपड़ी में आग लग गई। देखा, तांबे का टुकड़ा पिघलकर दूसरा ही-सा बन गया। फिर उसे और पिघलाकर देख लिया। फिर भारी पत्थर को देखा जिसका रंग तांबे जैसा था। उसे भी गलाया। अब आदमी भारी पत्थरों में से तांबा निकालने लगा। पत्थर में मिला लोहा भी हाथ लगा। लोहे को गलाने के लिए और तेज़ आंच चाहिए। दो-ढाई हज़ार वर्ष बाद आदमी लोहा भी बनाने लगा। तांबे के

स्त्रियां चमड़ा साफ करती थीं।

ज़माने में मिट्टी के और अच्छे बर्तन बनने लगे। अनाज भी खेत में बोने लगे। और गैया भी पाल ली। पहले मारकर खाने के लिए, फिर दूध के लिए। चीनवालों को मालूम ही नहीं हो पाया

1. पांच लाख

कि गाय-भैंस का दूध पिया भी जाता है। शायद लेप्चा-तमंग के बाप-दादा भी दूध पीना नहीं जानते थे। पीछे पच्छिम से लोग आए, वह बहुत दूध पीते थे।

मुन्ना-मुन्नी अब कपड़ा—बहुत मोटा-झोटा—पहनने लगे। अम्मा-पापा भी पहनने लगे। बहुत मोटा कपड़ा कपास का नहीं, बल्कि पाट का, भांग की छाल का और ऊन का भी। आदमी ने भेड़ों-बकरियों को जंगल से पकड़कर पाल लिया था। उन्हें मालूम ही नहीं हो पाया कि आदमी हमें मारकर खाने के लिए पालता है। जानतीं तो भाग नहीं जातीं! आदमी की अकल बहुत है न! तभी तो बानरों का भाई-बन्द होकर भी वह हाथी को पकड़ सका। चिड़ियाघर में देखा नहीं कि कित्ते सारे हाथी आदमी के कहने पर एक साथ तमाशा दिखलाते थे! हां, लेकिन एक बात। पहले पापा के साथ अम्मा भी शिकार करने जाती। कभी तो औरत ही सबकी मालिक होती। सभी आदमी उसकी बात को मानकर चलते। उस समय बहन भाई से भी बड़ी मानी जाती थी। पर अब तांबा जो हाथ लगा तो खेत बोने लगे, तो आदमियों ने अम्मा-बहन को घर का काम सौंप दिया। वह खाना बनातीं, रसोई का काम करतीं। पहले लड़कियों को भी लड़कों जैसा खेल सिखाया जाता। लड़ाई होने पर उन्हें भी तो पत्थर के हथियार लेकर लड़ने जाना पड़ता। जैसे-जैसे समय बीतता गया, औरत छोटी मानी जाने लगी और मर्द बड़ा। मर्द कमानेवाला बना, औरत खाना खिलानेवाली। तो मुन्नी अब गुड़िया से खेलने लगी और मुन्ना तीर-धनुष से। अब तो मुन्नी स्वेटर बुनती है गुड़िया के लिए और लड़के को अम्मा ऐसा काम करने नहीं देती। कहती है—'लड़कियों का काम है।'

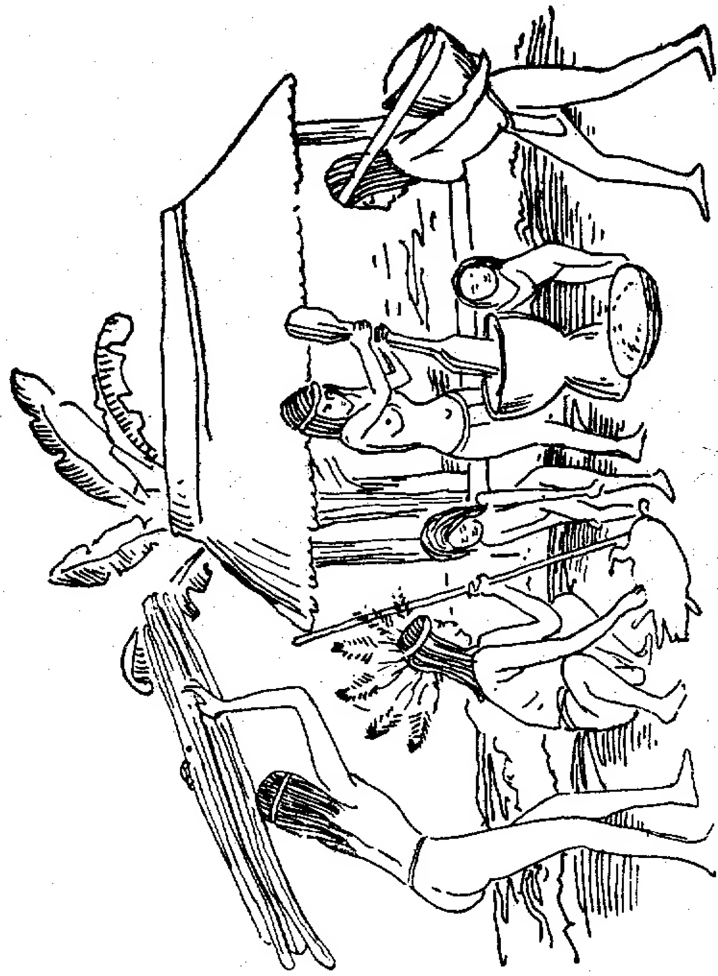

मानव एक परिवार बनाकर रहने लगा।

16

मुन्ना-मुन्नी ने कुत्ता भी पाल रखा था। अब आदमी के पास भेड़ें भी थीं, बकरियां भी थीं। अभी जंगली बकरियां और भेड़ें थीं, गाय-भैंसें थीं तो जंगली, पर आदमियों ने उन्हें पाल लिया था। भेड़-बकरियों को शेर-बाघ भी चाहते थे और भेड़िये भी। इन जानवरों के गांव के पास आते ही कुत्ते भौंकने लग जाते, फिर लोग सजग हो जाते। मुन्ना-मुन्नी भी दूध पीते थे, इसलिए बहुत तगड़े हो गए थे। एक दिन बच्चे गांव से बाहर खेल रहे थे। उनका कुत्ता भी साथ में था। गेंद दूर चला गया था। मुन्ना उसे लाने गया। देखा, खड्ड-सी जगह में एक काना गीदड़ बैठा हुआ है। मुन्ने ने काने गीदड़ से कहा—'मास्टर, आप कब से यहां तकलीफ कर रहे हैं?'

गीदड़ उठकर खड़ा हो गया। देख लिया न, मुन्ना अभी कुत्ते को बुलाएगा। वह धीरे-धीरे जंगल की ओर चलने लगा। पर, मुन्ना क्यों चुप रहने लगा! उसने कुत्ते का नाम लिया और कुत्ता दौड़कर वहां आ पहुंचा। काने गीदड़ की ओर उंगली दिखाते ही कुत्ता उसके पीछे दौड़ने लगा। काना गीदड़ भी जी-जान से दौड़ने लगा। 'ओ लिया, ओ लिया,' कहते सभी लड़के भी पीछे-पीछे भाग रहे थे। आखिर कुत्ते ने काने गीदड़ को धर दबाया। गीदड़ ने अपनी पूंछ को अपने दोनों पैरों के बीच दबा-कर कुत्ता के पास आते ही उसपर दांत चलाया तो भी कुत्ते ने कई जगह उसको काट लिया था। बच्चे भी पास पहुंच गए और लगे ढेला-पत्थर मारने। तब भी काना गीदड़ न हारा। इसी समय दूसरे कुत्तों को लेकर सयाने लोग वहां आ गए। सभी कुत्तों ने मिलकर काने को काट गिराया। फिर लोगों की लाठियां जब पड़ीं तो काना गीदड़ टें बोल गया।

उसे मारा क्यों? क्योंकि काना गीदड़ बकरी के छोटे बच्चों के नरम-नरम मांस के लिए आया था और बात बहुत उल्टी हो गई। लोगों ने जल्दी-जल्दी आग जलाई। वहां पास ही में कोई आदमी आग को जलती छोड़ गया था। सूखी लकड़ी डाल देने पर आंच तेज हो गई। लोगों ने उठकर काने को आग पर रख दिया और उलट-पलटकर उसे भून लिया। फिर तांबे की छुरियां कमर से निकाल लीं। काने को टुकड़े-टुकड़े करके वहीं रख दिया। बच्चों को पहले एक-एक टुकड़ा दिया गया। सब लोग भुने मांस को बड़े चाव से खाने लगे। उस समय आदमी सब जानवरों का मांस खा जाता था। जैसे आजकल हर आदमी के नाम के साथ जाति का नाम लगा रहता है, वैसे ही उस समय आदमी के नाम के पीछे जानवरों और वृक्षों के नाम लगे रहते थे। आदमी जाति के जिस जानवर का नाम होता, उसे आदमी नहीं मारता था। सियार नाम वाले वंश का आदमी वहां कोई नहीं था, इसलिए काने गीदड़ को किसीने नहीं छोड़ा। कुछ ही देर में काना लोगों के पेट में चला गया।

काने को कैसा मजा चखाया लोगों ने!

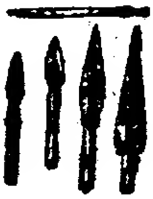

17

तो मुन्ना-मुन्नी अब तांबे के काल[1] में थे । उनसे पहले लाखों वर्ष तक आदमी खाली पत्थर के हथियार, शिकार और जंगली फल की आशा रखते थे । अब मुन्नी की मां मिट्टी गूंधकर अपने हाथ से बर्तन बना लेती । मुन्नी भी अम्मा की मदद करने के लिए जरूर बैठ जाती । पर तीन वर्ष की मुन्नी खाली मिट्टी ही खाया करती । तो भी अम्मा बुरा न मानती । उसने अपना मुन्नी को एक बन्दर और एक भालू भी बना के दे दिया । अम्मा के बर्तनों के साथ मुन्नी के बन्दर-भालू भी धूप में सूख गए । साथ ही आग में पककर लाल भी हो गए । उस समय मुन्ना-मुन्नी से बड़ा था । वह अपनी बहन को बहुत प्यार करता था । वह कोयला पीस उसमें चर्बी मिला काला रंग बनाकर लाया और बोला—'प्यारी बहना, ले, मैं तेरे बन्दर-भालू के मुंह और नाक बना दूं ।'

मुन्नी के बन्दर को लेकर पहले मुन्ने ने मुंह बनाया, काली लाइन डाल दी । फिर आंखें भी । पीठ की ओर ऊपर को उठती पूंछ भी लगा दी । भालू को भी ठीक कर सब बना दिया । उस समय अलग कुम्हार नहीं था, न लोहार ही । सारा काम लोग अपने हाथ से कर लिया करते । किसीका हाथ अच्छा था । वह सुन्दर बर्तन और खिलौने बना लेता । किसीका हाथ बुरा भी था । मुन्नी के खिलौने बहुत अच्छे थे । अम्मा ने एक दिन मिट्टी की गुड़िया भी बना दी थी : पर वह जापानी गुड़िया की तरह आंख खोलती-बन्द करती थोड़े ही थी !

अब तो हम स्पुतनिक के ज़माने में हैं । उस समय तो रेल और मोटर की बात भी कोई सोच नहीं सकता था । अभी बच्चे

मानव मिट्टी के बर्तन हाथ से बनाता ।

किताब लेकर स्कूल में पढ़ने नहीं जाते थे । उनका पढ़ना तो यही खेलना था । गाते-गाते बहुत-से गीत याद हो जाते थे । दादी कहानियां सुना देती । पत्थर-युग का आदमी बहुत कम शब्द बोलना जानता था । उसकी गिनती भी कम थी । बस, दस-बीस तक गिन लेते । उसकी आंखों के सामने थोड़ी-सी ही चीजें तो थीं । घर ही नहीं था तो फरनीचर की क्या ज़रूरत ! पर तांबा बना लेने के बाद आदमी मिट्टी का घर भी बनाने लगे । छोटे-छोटे घर । तांबे के कुल्हाड़े से वह लकड़ी काट लाता । हंसिया भी बना लेता ।

इसी समय कुछ लोग बढ़िया कुल्हाड़ा बनाने लगे । बच्चे सभी खुशामद करने लगे—'दादा, हमारे लिए एक कुल्हाड़ा बना दो ।' बेचारा दादा कितनों का कुल्हाड़ा बनाता ! उसे भी तो खेत में काम करना था । लोगों ने कहा—'दादा, कुल्हाड़ी बना दो, हम तुम्हें अपने अनाज में से थोड़ा देंगे ।' बस लोहार दादा को खेत जोतने की ज़रूरत नहीं । घर में बैठे कुल्हाड़ा बनाते और अनाज या शिकार घर बैठे ही चला आता । मिट्टी के बर्तन और दूसरी भी बहुत-सी चीजें घर-घर बनती रहीं । मुन्नी बहुत खुश थी । उसका भैया बन्दर को भी, भालू को भी रंगकर कितना अच्छा बना देता है ! मुन्नी की सहेलियों ने भी ऐसे खिलौने चाहे । मुन्ना ने उनके लिए भी इसी तरह बना दिए ।

1. ताम्रयुग

18

तांबे के युग के लोगों का गांव था । आसपास में उनके खेत भी थे । बरसात में धान हरा-हरा खड़ा था । कित्ती मेहनत से उसे लगाया था । पर, उस समय खेत थोड़े थे और जंगल ज्यादा । दिन को तो डरते थे, पर रात को जंगली गायें और हिरन जुट पड़ते थे । लोग पत्थर की लुकाठी बालकर उन्हें डराते थे । आदमी रात-भर जग भी तो नहीं सकते थे ! फिर जंगल में हाथी भी थे जो अकेले नहीं बल्कि पचीस-तीस के झुण्डों में खेत में पड़ जाते वह आग से भाग जाते थे—पर उनके नजदीक जाने में खतरा था । एक बार मुन्ने के गांववालों ने हाथियों से तंग आकर खेत के रास्ते में गड्ढा खोद दिया, ऊपर से घास-मिट्टी रखकर ऐसा बना दिया था कि मालूम ही न हो वहां गड्ढा है । आए हाथी । गांव-भर ने लुकाठी बाली । लोग ढोल पीटते हल्ला करते हुए निकले । हाथी दूसरी ओर भागे । पर उधर से भी आदमी आए । पर हाथी बड़े होशियार थे, सब गड्ढे से बचकर निकल गए, बस हाथी का एक छोटा-सा बच्चा गड्ढे में गिर पड़ा । हाथी डर के मारे खड़े भी नहीं हो सकते थे । लोगों ने गायों के दूध को पिलाकर उसे मोटा कर लिया । बस घड़े में दूध भरकर रख दिया जाता और पट्ठा सूंड डालकर पहले उसमें भर लेता, फिर मुंह में उंडेल लेता । एक दिन मुन्नी ने सफेद-सफेद दूध देखा तो ललचा गई । वह दौड़कर हाथी के बच्चे के पास चली गई । हाथी का वह बच्चा आदमी के बच्चे तथा गाय के बच्चे से भी बहुत खेलता रहता था । इसलिए दो बरस की मुन्नी उसके पास चली गई थी । हाथी के बच्चे ने अभी-अभी सूंड को दूध में डाला था । मुन्नी ने कहा—'ओ सब न पीना, मुझे भी देना ।' जानते हो क्या किया उसने ? बस अपनी सूंड मुन्नी के मुंह में रख दी । मुन्नी ने भी मुंह खोल दिया । बहुत ढीठ थी वह । गट-गट कर पीने लगी । छोटा-सा तो पेट था, कितना पीती ! मुंह हटाकर कहा—'नहीं, अब तू पी ।' हाथी का बच्चा तब भी सूंड को अपने मुह में डाल नहीं रहा था । उसके बाद तो मुन्नी और हाथी के बच्चे की बड़ी दोस्ती हो गई । मुन्नी लड़-झगड़कर अम्मां से घड़े में दूध

भरवाती। फिर बुलाती—'मुन्नू, आ जा दूध पी ले।' हाथी का बच्चा आवाज़ सुनते ही सूंड़ ऊपर उठाए चिंघाड़ता हुआ दौड़ता और मुन्नी के पास आ जाता मुन्नी के कुत्ते को यह बात पसंद नहीं थी। पर छोटा भी हो, आखिर था तो हाथी। डरकर दूर भाग जाता। बहुत दिनों तक मुन्नी सूंड़ से दूध पीती रही। बड़े होते ही हाथी ने दूध पीना छोड़ दिया। मुन्नी को भी दूध फीका लगने लगा। हाथी का बच्चा मुन्नी को अपनी पीठ पर बैठाकर जंगल के पेड़ों के पास ले जाता। मुन्नी पके फल खाती। आदमी अभी बाग नहीं लगाता था। जंगल के ही पेड़ों के फल वह जमा करता था। वह हाथी बहुत दिनों तक जिया। मुन्नी जब दादी बन गई, तब हाथी जवान हुआ था। वह बहुत बड़ा राजा हाथी बन गया। सबको बड़ा प्यारा था।

19

मैंने पहले ही कहानी में कहा था कि पत्थर-युग में लाखों वर्षों तक पुरुष का नहीं, स्त्री का हुकुम चलता था। जब आदमी निरा जंगली था तब स्त्री का राज्य था। जब आदमी कपड़े पहनने लगा खेती करने लगा, घर में रहने लगा तो रानी का हुकुम उठ गया। पुरुष का हुकुम है न आजकल सभी जगह!

उस दिन तांबे के युग का मुन्नी ने बहुत अच्छा सपना देखा। एक तालाब के किनारे मेंढकों की सभा हो रही थी। सभापति एक बहुत मोटा-सा पीला मेंढक बना था। पहले सबने मिलकर गाना गाया। गाना क्या था, टर्र-टर्र। फिर नाच करने लगीं मेंढकियां। पिछले दोनों पैरों पर खड़ी हो उन्होंने अगले दोनों पैर उठा लिए। बीस-बीस मेंढकियां एक ही बार बगल की ओर नाचती-खिसकती थीं। ढोल के बिना मज़ा नहीं आता था। तभी ढोलक गले में लटकाए चूहा आ गया। सभी मेंढकों ने चूहे को राम-राम किया। फिर ढोलक पर नाच शुरू हुआ तो लोगों को सबेरा होते देर नहीं लगी। सारी मेंढकियां नाचते-नाचते थक गईं पर चूहा नहीं थका। अन्त में चूहा ढोलक बजाते-बजाते नाचने भी लगा। सबेरा होते ही चील-कौओं ने हल्ला शुरू कर दिया। मेंढकियां पानी में कूद गईं, मूषक मारा जाने वाला था कि मुन्नी की नींद खुल गई। लोग कहते, मुन्नी ने चूहे को बचा लिया।

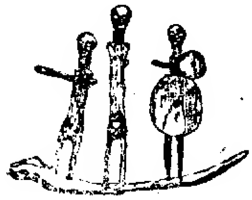

20

तांबे के युग का वह मुन्ना बड़ा होशियार था। एक दिन मुन्ना और मुन्नी—मुन्नी छोटी थी, और कित्ता भी कहने पर मुन्ने के साथ ही रहना चाहती थी—बहुत-से बच्चों के साथ खेतों की रखवाली करने गए थे। जंगल ज्यादा था, जानवर आकर खेत चर जाते थे। उस समय मक्की अभी अमेरिका से नहीं आई थी। नहीं तो खुब भुट्टे भूनकर खाते। लेकिन खेत में जाने पर किसीने बच्चों से कहा—'इस ताल में थोड़ा ही पानी है, देखे, कितनी मछलियां कुलबुला रही हैं।' मुन्नी ने चट कहा—'क्यों न बांध बांधकर पानी को दूसरी ओर उलीच दें। मछलियां कैसे रहेंगी।' और सूखी लकड़ियां भी बहुतेरी हैं।' बड़े लड़के भी साथ हो गए।

पहले मिट्टी डाकर पानी में मेंड बांध दी। उनके पास तांबे का फावड़ा था न, इसलिए मिट्टी काटने में देर न हुई। पत्थर का युग होता तो इसमें भी बहुत समय लगता। फिर पानी को हाथ से ही दूसरी ओर उलीच दिया। खाली कीचड़ रह गया। कुछ मछलियां तो कीचड़ में धुस जाना जानती थीं। वह घुस गईं। कुछ नहीं जानती थीं, वह ऊपर ही फड़फड़ाती रह गईं। बच्चों ने पहले इन्हींको पकड़कर सूखे गड्ढे में डाल दिया। इत्ती मछलियों को देखकर सब बच्चों को भूख लग आई। मुन्ने ने कहा—'दोस्तो, कहो तो हम दो-तीन लड़के आग पर मछलियों को भूनकर तुम्हें देते भी जाएं।' सभी बोल उठे—'वाह भई, मुन्ने, क्या खूब कहा!'

मुन्नी भी मुन्ने के साथ हो गई और दो लड़के भी। गांव से आग लाने एक लड़का दौड़ा। इधर दूसरे लड़कों ने कीचड़ में छिपी मछलियों को पकड़ना शुरू किया। गरई-भुट्टी मछली छटपटातीं बहुत, पर जल्दी पकड़ में आतीं। सिंही और मांगुर भी थीं: बड़ी मीठी मछली, पर कांटे ऐसे तेज़ कि हाथ में लगते ही लोहू-लुहान कर देतीं। दो ही सयाने लड़के थे, जो उन्हें पकड़ना जानते थे। वह भी कुछ को तो अपने मोटे डंडे से मार देते, कुछ को पकड़ भी लेते। मुन्ने के साथी मछलियों को भून-कर काम करने वालों के मुंह में खिलाते भी जाते थे। कहां हाथ की मिट्टी धोने जाएंगे। बहुत कहने पर उसीमें से खिलाने वाले लड़के अपने मुंह से भी एकाध टुकड़ा काट लेते थे। मछली खूब बढ़िया किस्म से भुनी हुई थी। केकड़े भी थे और सांप की तरह के वाम और गोइजे भी। पानी में पकाने पर ये इतने मीठे थोड़े ही होते। गांव दूर नहीं था। लोगों को आग लानेवाले लड़कों ने वतला दिया था। इसीलिए गांव-भर की अम्माएं, मौसियां और दादियां वहां पहुंच गईं। बच्चे बड़े खुश हुए। सबने कहा—'आज हम बच्चे मिलकर सबको मछली भूनकर खिलाएंगे।'

बहुत मछलियां थीं। बच्चे तब भूनने और खिलाने में लग गए।

21

तांबे के युग में आदमी ने खेत बोना ज़रूर शुरू किया, पर हल की जुताई पहले नहीं जानी। बस, छोटे-छोटे तांबे या लकड़ी के नोकदार हथियारों से ज़मीन खोद लेते थे, बीज बिखेर देते और अनाज जम जाता। बरसा ठीक समय पर हुई तो फसल पक गई, नहीं तो सूख गई, सिर्फ अनाज पर रहते तो भूखों मर जाते। अब गाय-बैल भी पालने लगे थे। शिकार कभी मिलता,

कभी नहीं मिलता। जब नहीं मिलता उस दिन घर के जानवर को मार लेते। दूध पीना तो जानते ही नहीं थे। चीनी लोग तो अभी-अभी दूध पीना जानने लगे हैं। सो भी शहरों में। वे भी

मानव तेज़ नोकदार लकड़ी से ज़मीन जोतता था।

बच्चे और बीमार। तांबे के युग के आदमी आखिर में जान गए कि हल से भी खेत को जोत सकते हैं। लाखों बरसों से पत्तियां, लकड़ी सड़ती रहीं, इसलिए बीज बोने की देर थी, वह जम जाता।

भी। फिर मालिक गुस्सा होता और नौकर को बहुत पीटता। आज जो मालिक-नौकर दिखाई देते हैं, वह इसी ज़माने में पैदा

मानव धागों से कपड़ा बुनने लगा।

हुए। पत्थर-युग में आदमी बानर जैसा ही था, पर उस समय न कोई नौकर था न कोई मालिक। बाबू और साहब भी कोई न था। सब अपने ही हाथ से काम करते थे।

बच्चों ने उस दिन कित्ती मछली मारी थीं। आप ही न खा सबको खिलाई भी। उनका खेल भी ऐसा था कि खाने की चीज़ें मिल जातीं। अभी भी आदमी के बेटे ने शिकार करना नहीं छोड़ा था। उस बखत न किताब थी, न कलम और न कागज़। अच्छर भी आदमी को मालूम नहीं था। पढ़ना तो दूर की बात। बस कुछ कहानी सुन ली, कुछ गाने याद करके गाने लगे। आदमी बहुत मज़बूत होते। पीले किरात उत्तर में रहते, दक्खिन में कोयले जैसे काले लोग, जिनको निषाद कहते। दोनों जाति कभी शिकार की जगहों के लिए लड़ भी पड़तीं। बहुत मार-काट होती। बच्चों को भी नहीं छोड़ते। पर लड़ना बहुत नहीं पड़ता था। आदमी बहुत कम थे उस समय और जंगल-ज़मीन ज्यादा थी।

उन दिनों आदमी का शिकार और खेती से काम चल जाता। घर के लिए झोपड़ियां बना लेते। कपड़ा, जाड़ों में पहनते या छाल-पत्तों को ही पहनने। पहले पत्थर के ज़माने में सब इकट्ठे रहते। साथ-साथ काम करते और साथ ही खाते। भूखा रहना पड़ता तो सभी भूखे रहते। यह नहीं होता था कि कोई खा रहा है और कोई भूखा है। अब तांबे के ज़माने में सब अलग-अलग रहते। झोंपड़ी भी अलग बनाते और अपने बच्चों के साथ रहते। अपना कमाना और अपना-अपना खाना। किसीके पास खाना ज्यादा हो तो दूसरे को भी खिला देते, पर उससे कहते—हमारा काम करो, हम तुम्हें खाना देंगे। आदमी पेट के कारण कहता—अच्छा। पेट के मारे ही अब लोग नौकर-नौकरानी भी बन गए थे। लोग उनको छोटा समझने लगे। भेद करने लगे आपस में। आदमी छोटे भी थे और बड़े भी, मालिक भी थे और नौकर

22

तो तांबे के ज़माने की मुन्नी एक बार बड़ी मुश्किल में फंस गई। एक बार वह जामुन खाने के समय कई और बच्चों के साथ जंगल में बहुत दूर चली गई। सबके हाथ में तीर-धनुष थे। सभी पेड़ चढ़ना जानते थे। नदी के किनारे जामुन के हज़ारों पेड़ लगे थे। जंगली थे। आदमी अभी बगीचा नहीं लगाता था। पेड़ काले-काले जामुनों से लदे हुए थे। वह बहुत मीठे थे खाने में। इसीलिए काले-काले भंवरे उनका स्वाद ले रहे थे। नीचे ज़मीन पर भी बहुत-से जामुन पड़े हुए थे, पर बच्चे पेड़ पर चढ़े बिना कैसे मानते? ऊपर जाकर ज़रा-सा हिलाया कि टोकरियों-भर जामुन नीचे गिर गईं। सब बैठकर खाने लगे। छोटे बच्चे कुछ खाते थे, कुछ को देह-भर में लपेटते थे। गरमी खतम होकर अभी ही वर्षा होने लगी थी। कपड़ों की उनको ज़रूरत नहीं थी। टोकरियां पास में थीं कि कोई चीज़ मिले तो लेते आवें।

खाते-खाते जामुनों से पेट भर गया। टोकरियां भी भर लीं। अभी दिन बहुत था। बच्चों को जल्दी नहीं थी। बांस का बाजा और मुंह की बंसी उनके पास थी। बस, नाच भी होने लगा और गीत भी। इसी समय एक लड़के की नज़र पहाड़ की ओर पड़ी। कोई काली-काली-सी चीज आ रही थी। शिकारी लड़कों की आंख, नाक और कान बहुत तेज़ होते हैं। एक लड़के ने चिल्लाकर कहा—'अरे, हाथी! इधर ही आ रहे

हैं !' बच्चे गांव की ओर भागते । पर क्या करें, गांव तो बहुत दूर था । पास में ही एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ था । सबमें सयाने लड़के ने कहा—'उसी बरगद पर चढ़ जाओ ।' वह छोटे बच्चों को चढ़ाने लगा । सब लोग बहुत ऊपर जाकर बैठ गए । सयाने लड़के डरनेवाले नहीं थे । पर छोटे लड़के कांप रहे थे । उन्हें बहुत समझाया । उस समय आदमी जंगली जानवरों के बीच ही रहता था । डरने से काम कैसे चलता ? देर में हाथी भी आ गए । सबसे सयाना लड़का भी दस ही तक गिन सकता था । उसने हाथियों को गिनना शुरू किया—'एक नहीं, दो नहीं, दस । ओह और भी ज्यादा ।' उनमें बड़े भी थे, छोटे भी । एक राजा हाथी तो बिलकुल पहाड़-सा मालूम होता था । सब हाथी सूंड़ को ऊपर उठाकर क्यां-क्यां कर रहे थे । सयाने लड़के ने धीरे से कहा—'सूंड़ ही तो इनकी नाक है और और सूंड़ से ही पानी पीते हैं । सूंड़ न हो तो हाथी न खाना खा सके न पानी पी सके । लेटने पर भी उसका मुंह ज़मीन तक नहीं पहुंच सकता ।' सूंघकर हाथी जान गए कि वह बरगद का पेड़ है । उसपर आदमी के बहुत-से बच्चे बैठे हैं । आदमी हाथियों का दुश्मन है । और ये दुश्मनों के लड़के हैं । इन्हें ज़िन्दा नहीं छोड़ना चाहिए । पर सूंड़ उन बच्चों तक नहीं पहुंच सकती थी । उन्होंने पेड़ की छोटी डालियां तोड़ डालीं, धक्का दिया, पर पेड़ तो केवल हिल कर रह गया । बेचारे हाथी लौट गए ।

23

कल की कहानी पूरी सुनो । बीस के करीब बच्चे बरगद के बड़े पेड़ पर चढ़ गए थे । नीचे तीस के करीब हाथी खड़े झूम रहे थे । वे बच्चों की ओर देखते थे और बच्चे हाथियों की ओर । सूंड़ कितना ही ऊपर उठाएं, वह बच्चों तक नहीं पहुंच सकती थी । उनका चिंघाड़ना घनघोर था । पर बच्चे तो अभी आधे जंगली आदमी के थे । वे डरनेवाले नहीं थे । वे तो मज़े से पेड़ की डाली पर बैठे हुए थे । भूख लगती, पर उनके पास बहुत सारी जामुनें थी । बच्चे खाकर जामुनों की गुठलियां नीचे सबसे बड़े हाथी पर फेंक रहे थे । बड़ा हाथी इससे भी बड़ा नाराज़ हो रहा था और वह ज़ोर से पेड़ पर धक्का लगाता । पेड़ हिल जाता था । पर थोड़ा ही । थोड़ी देर में तो छोटी मुन्नी भी ढीठ हो गई । वह हाथी पर गुठली फेंकती और चिल्लाकर उसे चिढाती भी जाती ।

थोड़ी देर बाद सूर्य डूबने को आया । उधर की ओर लाली छा गई । बादल कम ही थे और जो थे वह नारंगी की तरह लाल हो गए थे । पर हाथी टलने का नाम ही न ले रहे थे । बड़े सरदार लड़के ने कहा—'अच्छी बात है, यहीं रहो । हम तो भूखे नहीं मरेंगे, पर तुम ज़रूर मरोगे । तुम्हारे बाल-गोपाल सूंड़ से दूध पी रहे हैं न, शायद वे ही भूखे न रह जाएं ।'

अंधेरा हुआ, पर हाथी अब भी वहां जमे हुए थे । बच्चे भी घर जाने के लिए उतावले होने लगे । वे भूखे नहीं थे, न रात-भर भूखे रह सकते थे । पर नींद तो आती ही । हो सकता है, कोई नींद में नीचे ही लुढ़क पड़ता । फिर क्या हाथी उन्हें छोडता ? वह सूंड़ से ऊपर उठा लेता, फिर पैर के नीचे डालकर कुचल देता ।

आधे जंगली लड़के टोकरी ही नहीं लाए थे वल्कि बांधने के लिए रस्सियां भी थीं । पहले छोटे बच्चों को डाल से बांध दिया, फिर अपने को भी । अब सब निश्चिंत हो गए । घड़ी रात हो गई, दो घड़ी गई । आंखें किसी-किसीकी झपने लगीं । हाथियों के भी कुछ छोटे-छोटे बच्चे ज़मीन पर लेट गए । यदि उनको बोलना आता तो कह देते—जाने दो इन बच्चों को । इन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाडा है ।

बच्चे सोच रहे थे, रात-भर हमें हाथी नहीं छोड़ेंगे । तीसरी घड़ी बीत जाने पर देखा, हाथी सूंड़ उठाए उस ओर देख रहे थे जिधर गांव है । सब खड़े हो गए । कुछ खलबली मची । बच्चे भी आदमियों का हल्ला सुन रहे थे । हां, हाथियों की ही ओर । पत्ते से ढके होने से सबको दिखाई नहीं पडता था, पर कुछ को दूर रोशनी दिखाई दे रही थी । अपने बच्चों को खोजने के लिए सारे गांव के माता-पिता निकल पड़े थे । हाथी घबरा उठे । आदमी से क्या घबराते ! अभी तो उसके मामूली तांबे के हथियार थे, लेकिन आग देवता अब आदमी का साथी बन गया था । आग से सारे जानवर घबराते हैं । सचमुच वही हुआ । सब हाथी जान लेकर भागे ।

मानव ने आग पैदा करने की नई विधि ढूंढ़ निकाली ।

तांबे के ज़माने का आदमी तांबे की तलवार से बहुत मज़बूत हो गया। पर उसी समय स्त्री छोटी हो गई और सभी बातों में पुरुष अपने को बड़ा मानने लगा। बाहर कमाने का काम आदमी करता। वही गायों-भेड़ों को चराता, खेत जोतता। हां, एक और चीज बुरी हुई। मर्द-औरत बाज़ार में बिकने लगे।[1] पहले जब दो गुहाओं में कभी लड़ाई हो जाती, तो वह एक-दूसरे को मार डालते थे। उन लोगों काम था शिकार, मछली मारना और जंगल से फल तोड़ लाना। वे सभी काम कर लेते थे। दूसरी जगहों के आदमियों को बुलाते तो खिलाना पड़ता न! अब आदमी ने आदमी को खाना छोड़ दिया था।

खेती का काम जब हो गया तो खेतों में ज्यादा काम करना पड़ता। जानवर पालने लगे तो उसमें भी काम बढ़ गया। अब जब लड़ाई होती, औरत-मर्दों को लाकर उनसे भी काम लेते, वैसे ही जैसे गाय-बैल से। जिन आदमियों को पकड़कर काम में लगाया जाता उनको दास-दासी कहते। वह पशुओं की तरह ही डंडों से पीटे जाते। सबसे खराब खाना और खराब कपड़ा उनको देते। एक बार घर की मालकिन गाय का दूध दुहने लगी। गाय कुछ बड़ी थी। दासी को उसने कहा—'री काली, क्या देख रही है? ज़रा अपनी पीठ का मोढ़ा बना दे तो।'

1. दास-प्रथा का आरम्भ

काली कमर झुकाकर मोढ़ा बन गई। मालकिन उसपर बैठकर दूध दुहने लगी। दासी के होते वह खुद दूध दुह रही थी, क्योंकि दास-दासी तो मालिक के बछड़े की तरह थे। मालिक कहता—'इतने बच्चे हमें नहीं चाहिए।' बस, ले जाकर बाज़ार में बेच देते। उस समय दास-दासियों के बाज़ार लगते थे। मां रोती रह जाती और बच्चे उससे छीनकर बेच दिए जाते। तांबे के ज़माने से दास बिकने लगे।

दास मार के डर से बहुत काम करते। सवेरे अंधेरा रहते ही काम में जुट जाते। आधी रात उन्हें सुस्ताने की फुरसत न मिलती। कोई मालकिन अच्छी होती, तो दास-दासियों का ख्याल रखती। दास धनी लोग ही रखते। पत्थर के युग में धनी-गरीब नहीं थे। जो कुछ खाने की चीज़ें जंगल में थीं, सभी

पहले औरत मज़बूत थी, अब आदमी मज़बूत हो गया।

मिलकर जमा करते और इकट्ठा खाते। तांबे के युग से सब अलग-अलग रहने लगे। अपनी चीज़ अलग रखने लगे। अब कोई-कोई धनी होने लगे। कुछ गरीब भी। दासों के होने पर तो धनी और भी धनी होने लगे।

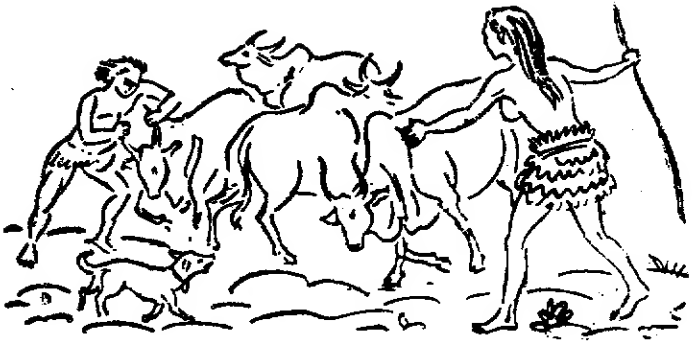

आर्य लोग पशु-पालन करते थे।

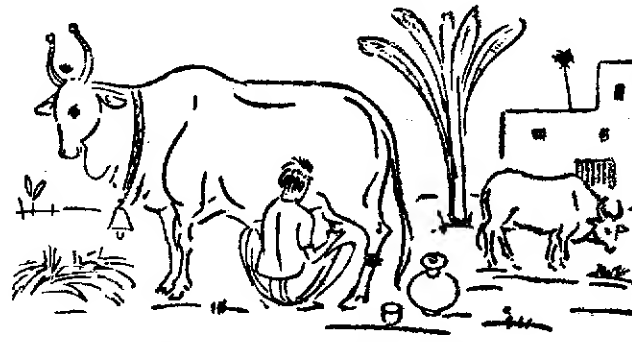

लोग दुधारू पशुओं का दूध दुहते थे।

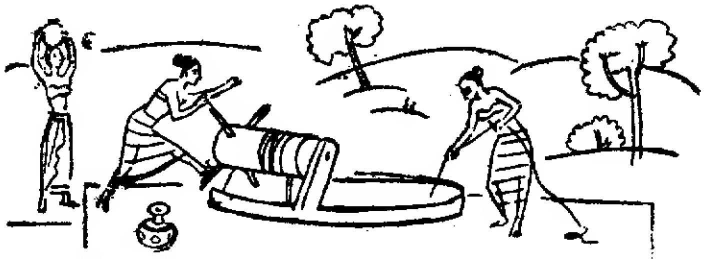

स्त्रियां पानी भरने आदि का काम करने लगीं।

तांबे वाला ज़माना दो-ढाई हज़ार बरस से अधिक रहा। उसी समय आदमी ने गिनती सीखी। अच्छर नहीं था। हां, उसी समय दो मुन्ना-मुन्नी भाई-बहन थे। मुन्ना छोटा था और मुन्नी बड़ी। मुन्नी अम्मा-पापा की बात मान जाती, लेकिन मुन्ना नहीं मानता था। मुन्ने का दोष भी नहीं था।

तो मुन्ना बात कभी नहीं मानता था। यह बात सबको मालूम हो गई। मुन्ने के मन में एक नहीं दो मुन्ने थे। दोनों की देह एक थी, मन दो। जब अम्मा-पापा कोई काम करने को कहते, तो बदमाश मुन्नू पहले ही बोल उठता—'नहीं, यह काम नहीं करना है।'

बेचारा मुन्ना कहता—बहुत समझाता, पर वह जो शैतान मन में बैठा हुआ था, बात ही नहीं मानता था। मुन्ना ने एक दिन पापा की बात न मानकर उन्हें नाराज़ कर दिया था। उस समय नाराज़ हो जाने पर अम्मा-पापा बहुत पीट दिया करते थे। मुन्ने को पिटाई का उतना दुःख नहीं था। उसकी बहन ने पीठ सहलाई और प्यार किया। अपने भैया का मुंह भी चूमा। और कहा—'भैया, तू ऐसा क्यों करता है?' मुन्नू बहन के गले से लिपटकर कहने लगा—'दीदी, मेरे मन में तो दो जने घुसे हुए हैं। एक तो अच्छा है, कहता है—अम्मा-पापा हमें कितना प्यार करते हैं! हमारी भलाई जितनी वह चाहते हैं, वैसी

दूसरा कौन चाहेगा, करेगा ! पर वहां तो दूसरा भी चोर घुसा हुआ है, जो मना कर देता है। बस, मैं अम्मा-पापा की बात नहीं मान पाता।'

मुन्नी ने कहा—'चोर की बात नहीं माननी चाहिए। बस अम्मा जो कहें उस काम में लग जाना चाहिए।' मुन्ने ने कहा—'काम में लग जाने से उनकी बात कमज़ोर हो जाती है। क्या तेरे भीतर भी दोनों हैं !' 'हां, मेरे भीतर भी, सबके भीतर दोनों मन होते हैं। चोर मन की बात कभी नहीं मानना। चोर वही है जो अम्मा-पापा की बात मानने से रोकता है। चोर वही है, जो नींद खुलने पर भी चारपाई न छोड़ने को कहता है। अगर उस चोर की बात माने तो आदमी का कोई काम नहीं हो सकता।'

उस दिन मुन्ने को मालूम हो गई यह बात। वह भी सोचता था कि एक नहीं दो मन हमारे भीतर हैं। अब वह चोर मन से सजग रहने लगा। अम्मा ने कहा—थोड़ी घास काट के ला। चोर मन ने तुरन्त चुपके से कान में कहा—न कर। मुन्ना कहने लगा—क्यों, अम्मा की बात न मानूं ?

—मेहनत का काम है, काहे घास काटने जाओगे ?

मुन्ने ने समझाया—ऐसा नहीं करेंगे।

बस, मन का चोर दब गया।

26

पत्थर युग में काली और पीली जातियों की लड़ाई हुई थी। यह पहले ही लिख चुका हूं। उसके बाद लड़ाई नहीं हुई, यह बात नहीं। दोनों जाति के लोग बच के रहते थे। पीछे एक और जाति[1] के लोग आ गए। यह न पीले थे न बहुत काले थे। बस सांवले-से थे। एक बात और इनमें थी। यह तांबे से हर तरह का हथियार बनाते थे। गंगा में ही नहीं समुद्र में भी जहाज़ चलाते थे। लोहे के जहाज़ नहीं। उनका चलाना तो अभी जाना ही नहीं था। बस, लकड़ी के बड़े-बड़े जहाज़, जिन-पर लकड़ी के पाल तान देते, तो हवा उनको ज़ोर से खींचती ले चलती थी। ये लोग लड़ने में भी होशियार थे। लेप्चा-तमंग जाति के बाप-दादा किरात बड़े लड़ाकू थे। और काले लोग—निषाद—भी कम नहीं थे। पर ये सांवले लोग उन सबमें बहुत होशियार थे। बहुत तरह के कपड़े बनाते, खेती बहुत अच्छी करते और गाय-बैल पालते। बैलों को अपने रथों में जोतते और दौड़ाते। गांव नहीं, शहर बसाकर रहते। ईंटों के दुमंज़िले-तिमंज़िले मकान बनाकर उनमें रहते। अमृतसर से भी पश्चिम, सिन्धु नदी के किनारे पहले बस गए। फिर पूरब को ओर बढ़े। नदियों के किनारे उनके शहर थे। बड़ी नावों में यात्रा करते, माल बेचने के लिए ले जाते।

सिंधुवाले लोग बढ़ते-बढ़ते बनारस पहुंच गए। वहां किला बना लिया और दुकान भी खोल दी। किरात और निषाद जंगल के शिकार, बाघछाला, मृगछाला, मधु, जंगली फल और अनाज भी सिंधुवालों के पास ले जाते। वह खरीदकर अपनी चीज़ें दे देते। जंगली क्या थे, वे चालाकी समझते थे। सिन्धु-वाले इनका माल सस्ता लेते और अपना महंगा बेचते। इसलिए कभी-कभी झगड़ा हो जाता तो बहुत-से आदमी मारे जाते। कुछ को दास बनाकर बेच देते। धीरे-धीरे सिंधुवालों की ताकत बढ़ गई। दूसरे लोग उनसे डरने लगे। सिंधुवालों के राजा को अपना राजा मानने लगे। उनको हर साल बहुत धन देते।

पहले की दोनों जाति के लोग लिखना नहीं जानते थे। सिंधुवाले लिखना जानते थे। जो अक्षर नहीं होता तो क्या हम अपने बेटों को इस तरह चिट्ठी लिख पाते ! पुराने युग में जब रेल, हवाई जहाज़ नहीं थे, लोग कित्ते महीने पैदल चलते थे। अच्छर न होता तो इस तरह पैदल चलनेवाले आदमी को पापा कह देते—यह बात हमारी बिटिया से कह देना, यह बात बेटे से कह देना। वह बेचारा आदमी भला कित्ता याद रखता ! हां, जब सिंधुवालों को लकड़ी पर, पत्ते पर चिट्ठी पढ़ते देखा तो दूसरे लोग अचरज करने लगे। उसे जादू-मन्तर समझने लगे। लेकिन लिखते बहुत थोड़े थे। कागज़ अभी नहीं था, स्लेट-पेंसिल नहीं थी। कभी चमड़े पर लिखते, कभी लकड़ी पर।

1. आर्यजाति

27

हां, तो पीले, काले और सांवले तीनों जाति के लोग रहते थे। पर सब एक-दूसरे की घात में रहते। कभी-कभी झगड़ा नहीं रहता तो हंस-बोल भी लेते। पर तीनों तीन तरह की बोली बोलते। एक-दूसरे की बात न समझते।

बनारस के पास की बात थी। पास में एक जंगल भी था, जिसमें हाथी भी रहते थे। वहीं जंगल में निषाद लोगों का गांव था। कई फूस की झोंपड़ियां थीं। उन्हें भी कभी छोड़कर वह दूसरी जगह जा बसते थे। बनारस में सिंधु वालों के ईंटों के घर बन गए थे, सड़कों पर बैलों के रथ भी दौड़ते। वहां के सिंधु बनियों ने जहां-तहां व्यापार के लिए अपने नौकर रख रखे थे। व्यापार सभी तरह के होते थे। निषाद लड़के-लड़कियां नाच-गाना कर रहे थे, खेल रहे थे। नाच-गाने में घर जाने की बात भूल गए थे। इसी समय जंगल में से कुछ आदमी आ गए। नाच-गाना बन्द हो गया। आदमियों ने बच्चों को घेर लिया और तलवार निकालकर ज़ोर से डांटा—'खबरदार, चिल्लाना नहीं। नहीं तो तलवार तुम्हारे पेट में घुसेड़ दी जाएगी।' यह सुनकर सभी चुप हो गए।

फिर उनमें से एक लड़का निषाद को बोली में बोला—'चलो हमारे आगे-आगे।' वह उन्हें मगही नदी के पास ले गए। वहां नाव आई थी। सब बच्चों के हाथ बांध दिए गए।

नाव पर सोलहों लड़के-लड़कियों को बैठा दिया गया। उनको पकड़नेवाले भी उसीपर बैठ गए। बरसात की नदी थी, इसलिए पानी भी खूब था। नहीं तो इस छोटी नदी में नाव थोड़े ही चल सकती थी। सब काम ऐसे चुपचाप हुआ कि किसीको पता ही नहीं लगा। बच्चे आठ से सोलह बरस के थे। बेचारे ज़ोर से चिल्ला नहीं सकते थे। एक बच्चे के ज़ोर से रोने पर कान काटा जा चुका था। कान से खून बह रहा था। अंधेरे में नाव ज़ोर से चली। बच्चों ने देख लिया कि उनको पकड़नेवाले लोग पीली किरात जाति के थे। उनमें से एक ही थोड़ी-सी निषाद बोली बोल लेता था। बच्चे चुप हो गए थे पर उनकी आंखों से आंसू टपक रहे थे। बच्चों को रोटी के टुकड़े और कुछ भुनी मछलियां दे दीं। डर के मारे उनकी भूख तो भाग गई थी। छोटे मुन्नेने बहुत गिड़गिड़ाकर कहा—'मामा, हमें अम्मा के पास ले चलो।'

मामा ने कहा—'वहीं ले जा रहे हैं।'

अब सब बच्चे हंसने लगे।

रात में ही नाव मगही नदी से गंगा में चली गई। वहां बड़ी नाव खड़ी थी। बच्चों को उसपर चढ़ा दिया। किरात चले गए। अब बच्चे जिनके हाथ में थे, वह उनकी बोली में बात करते थे। उन्होंने कहा—'हम तुम्हें जंगल से बाहर निकालकर शहर में ले जा रहे हैं।' अन्त में वे उन्हें बनारस में दासों के बिकने की हाट में ले गए। वहां उन्हें पेड़ के नीचे बैठा दिया। घड़ी-दो घड़ी में उन्हें खिला-पिला दिया। तब बहुत-से सिंधु आदमी आ गए। उन्होंने बच्चों को तांबे के टुकड़े के दाम में खरीद लिया। एक-दो खरीदने वाले आदमी आ गए। फिर सब दासों को वह बांट ले गए। बच्चे फिर अपने अम्मा-पापा से नहीं मिल सके।

28

तांबे के युग वाला वह मुन्ना बड़ा चालाक निकला।

जंगल में बन्दर पकड़ने के लिए लड़कों ने फन्दा लगा रखा था। फन्दा बड़ा था और उसके बीच में छोटा-सा गड्ढा खोद-कर उसमें बहुत-सा दाना डाल रखा था। रस्सी के फन्दे का छोर बहुत दूर ले जाकर मुन्ना और उसके साथी बैठे हुए थे, आड़ में। बन्दर आते, दाने को देखते, फिर हट जाते। उनके पास बोली नहीं थी, नहीं तो कहते—हमारे ही वंश के आदमी हमको निरा बुद्धू समझते हैं। लड़के सारे दिन अगोरते रहे, लेकिन कोई बुद्धू बन्दर फन्दे में नहीं फंसा।

मुन्नू उदास नहीं हुआ। वह दूसरे दिन भी वहां गया और दो फन्दे लगा दिए। सबेरे के बैठे दोपहर तक पहुंच गए। पहले दिन बन्दरों का बड़ा मुखिया उछलकर डरा देता। कोई बन्दर पास नहीं आता। आज एक और भारी बन्दर कहीं से आया। वह लड़ने के लिए ही आया था। फिर क्या, लड़ाई कहो या कुश्ती हो गई। दोनों एक-दूसरे को काटते, नाखून से नोचते। दूसरे बन्दर और बच्चे घबराए दूर हट गए। बड़ा बन्दर अपनों को भी बुरी तरह से पीटता था, इसलिए कोई उसे पसन्द नहीं करता था।

इधर लड़ाई छिड़ी थी और उधर धीरे से दो बन्दर बच्चे फन्दे के पास चले गए। उन्हें चारा बहुत पसन्द आया। हाथ डाल ही तो दिया। मुन्ने ने दोनों फन्दों की रस्सी एक ही बार खींची। पर, थोड़ी देर हो गई। एक छोटे बच्चे का हाथ फंस गया। दूसरा भाग गया। मुन्ना चिल्लाया। बन्दरों को उन्होंने मार भगाया। किसीने कहा, उस बन्दर के बच्चे को भूनकर खा जाएं। उस ज़माने में सभी लोग बन्दर भी खा जाते थे।

मुन्ना रोने लगा। उसने बन्दर के बच्चे को गोद में छिपा लिया। बच्चा बच गया। मुन्ना उसे अपनी बकरी का दूध पिलाता। दाना खिलाता। दो-चार दिन बच्चा डरता रहा। फिर गोदी में आ गया। मुन्ने ने उसे कई बातें सिखलाईं। वह कुछ महीने बाद दोनों पैरों से चलने लगा। अब कन्धे पर लाठी लेकर चलता!

वह मुन्ने को ही मानता था। दूसरे लड़के पास आते तो दांत किटकिटाता। कान पीछे की ओर ले जाता और मुंह-हाथ हिलाकर घुड़कता। छोटे बच्चे उससे बहुत डरते। मुन्ना किसी लड़के की ओर हाथ दिखाकर पकड़ने को कहता, तो बन्दर जाकर लड़के के कन्धे पर हाथ रख लेता। बच्चा समझता, मुझे खाने आया है। पर वह बन्दर किसीको न काटता। मुन्ना बहुत छोटा नहीं, दस बरस का था। जब बाहर निकलता तो बन्दर मुन्ने के कंधे पर बैठ जाता, और मुन्ने के बालों में से जूं निकालकर खाता। उस समय लोग बाल बहुत ही कम बनाते। नहाने का भी शौक नहीं था। इसलिए सबके बालों में बहुत जूंएं पड़ी रहतीं। बन्दर दोनों हाथों से इतनी जल्दी-जल्दी जूं निकाल के मुंह में डालता कि कुछ न पूछो।

29

मुन्ने की छोटी बहन मुन्नी थी न। वह अपने भैया को बहुत-बहुत प्यार करती थी। मुन्ने के बन्दर को देख उसका मन भी ललचाने लगा। मुन्ना कहता—'ले ले न इसीको।' पर मुन्नी डरती भी थी। एक दिन उसने एक पेड़ पर तोते के बच्चे देखे। तोती कहीं गई हुई थी। बस, मुन्नी एक बच्चा उठा लाई। उसको छोटे-छोटे कीड़े खिलाने लगी। एक पिंजड़ा सुन्दर बनाकर उसमें रख दिया। मुन्नी उससे बात करती—'मीठा फल खाओ। भूख लगी है?'

तीन-चार महीने बात करते हो गए। बच्चे के खूब बाल निलक आए। अम्मा ने कह दिया—'बाहर न निकालना, नहीं तो भाग जाएगा।' मुन्नी ने पूछा—क्यों भाग जाएगा? मैं कित्ता अच्छा खाना देती हूं, मीठे फल ढूंढ़कर लाती हूं।'

अम्मा ने कहा —'इसकी भी तो अम्मा है। वह अपनी अम्मा के पास भाग जाएगा।' इसलिए मुन्नी प्यार तो खूब करती, पर तोते को पिंजड़े से बाहर न निकालती।

एक दिन देखा, तोता कह रहा है—'भूख लगी है, आम लाओ, केला लाओ।' यह सुनकर मुन्नी को बड़ा अचरज हुआ। तोते का बच्चा हमारी तरह आदमी की बोली बोलता है। उसके गांव में यह पहला तोता पाला गया था। शायद इसी मुन्नी ने पहले पाला या दूसरी ने। पहले आदमी जानता ही न था कि

तोता भी आदमी की बोली बोल सकता है। मुन्नी अपने तोते को और मुन्ना अपने बन्दर को लेकर बाहर निकलते।

एक दिन दो औरतें झगड़ा कर रही थीं। मुन्नी देखने लगी खड़ी होकर। तोते के पिंजड़े को धरती पर रख दिया। मुन्नी घर चली आई। रात को तोते चुप रहते हैं। सबेरे बाहर पेड़ों पर चिड़िया चहचहाने लगीं। कौए का तो रूप भी बुरा है और बोली भी 'कांउ-कांउ' कित्ती भद्दी है! पर दूसरी प्यारी-प्यारी चिड़ियां भी बतेरी हैं। तोते को बड़े सबेरे ही मुन्नी ने मीठा फल दे दिया। खाकर वह भी चिड़ियों की बोली में बोलने लगा। पर, वह तो आदमी की बोली बोल रहा था। और क्या बोला, झगड़े की बोली—'तू मर जा, जा। नहीं मैं क्यों मरूंगी, तू मर जा, तुझे कुत्ते-स्यार खा जाएं।' और क्या-क्या बोलता रहा। जब प्रसन्न होता तो कहता—'मुन्नी जी, क्या करती हो? खाना खा रही हो? खाना लाओ, मीठा पानी पीयो। मुन्नी जी, मुझे भूख लगी है।' पर उसको भूख नहीं लगी थी। वह बोलने के लिए ही कह रहा था।

मुन्नी बुढ़िया हो गई, उसकी बेटी भी बुढ़िया हो गई, पर तोता वैसा ही रहा। तोते बहुत दिनों तक जीते हैं। मुन्नी ने अपनी नतनी की बेटी से कहा—'मैं छोटी-सी थी तब इस तोते को पाला था।' अब तो तोता और भी ज्यादा बोलता था।

कैसे तोते होते हैं, आदमी की तरह भी बोलते हैं!

30

और पीछे एक मुन्ना हुआ। अभी तांबा ही चलता था। मुन्ने ने देखा, एक बड़ी चील आकाश में उड़ रही है। वह पंख भी बिना हिलाए जा रही थी। मुन्ने ने कहा—'अम्मा, मैं भी चील की तरह उड़ना चाहता हूं।' पास में खड़ी मुन्नी ने कहा—'चील बन जाओ ना!

मुन्ना बोला—'चील कैसे बनूं? मैं चील बन जाता, पर कैसे बनूं?' मुन्नी बोली—'तब तुम उड़ नहीं सकते।' मुन्ना सोच रहा था—मैं तो सपने में उड़ता हूं। वैसे क्यों नहीं उड़ सकता? अम्मा ने समझाके कहा—'नहीं बेटे, आदमी नहीं उड़ता, मछली भी नहीं उड़ती। कछुआ, केकड़े भी नहीं उड़ते। सिंह और हाथी भी नहीं उड़ते।' छोटा-सा बेचारा मुन्ना था। वह बहुत दुःखी हुआ। पानी में वह तैरने लगा था। उसने कहा—'अम्मा, हम मछली जैसे कहां हैं पर पानी में तैर लेते हैं।' अम्मा ने बहुत समझाया, पर मुन्ना रोता ही रहा। मुन्नी ने पूछा—'अम्मा, क्या चिड़िया ही उड़ सकती हैं और कोई नहीं?' 'उड़ने वाले ही होते हैं जिनकी चोंच होती हैं। बस चमगादड़ ही एक दांतवाला जानवर है, जो चमड़े के पंखों से उड़ता है।' तो मुन्ना बोल उठा—'हम भी चमड़े के पंख लगा लेंगे।' अम्मा मुन्ने के मुंह पर चुम्मी देते बोली—'पंख चिपकाए थोड़े ही जाते हैं! वह तो जनमते ही उगते हैं।' मुन्ने को बहुत दुःख हुआ कि मैं उड़ नहीं सकता। उसने अपनी एक मौसी से भी पूछा। उसने भी कह दिया कि आदमी नहीं उड़ सकता, कभी नहीं उड़ा और और न कभी उड़ेगा। क्योंकि उसके पास पंख नहीं होते। उसके दांत भी हैं। मुन्ना सोचने लगा—जो हमारे दांत चोंच हो जातें और पंख भी उग जाते तो कितना अच्छा होता!

मुन्ना जब बड़ा हो गया, तब वह भी कहने लगा—'आदमी नहीं उड़ सकता।' फिर नया मुन्ना आया। उसने अपने को सपने में उड़ता हुआ देखा। चिड़ियों को भी उड़ते देखा। उसे भी उड़ने का लालच आ गया। सभी मुन्ने उड़ने के लिए रोते चले गए।

पापा जब बच्चे थे तो मोटर भी पैदा नहीं हुई थी। हवाई जहाज़ की तो बात ही क्या। पर आज के तो मुन्ने-मुन्नी भी उड़ रहे हैं और कित्ता तेज़। कोई चिड़िया इतनी तेज़ उड़ान नहीं कर सकती। जिन्होंने हवाई जहाज़ बनाया, उन्होंने पहले बहुत पढ़ा। रात-रात टेबुल (पहाड़ा) याद करते रहे। लोहा बना, फिर उससे भी कड़ा लोहा बनाया। पहले गुब्बारे पर उड़े, फिर हवाई जहाज बना दिया। अब हम कित्ते आराम से हवाई जहाज़ में चलते हैं, इत्ता आराम न मोटर में रहता न रेल में।

○ ○ ○